खंड 2 अंक :1 जनवरी - मार्च 2026
त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका

मूल्य :अमूल्य

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

7 साल का बेमिसाल सफ़र

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

नवाचार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शिक्षक गाथा

विद्यालय गाथा

डिजिटल दुनिया

ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन करें

प्रज्ञानिका

अस्वीकरण / कॉपीराइट सूचना

प्रज्ञानिका एक त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका है, जिसका प्रकाशन टीचर्स ऑफ़ बिहार (Teachers of Bihar) द्वारा किया जाता है। इस पत्रिका का उद्देश्य शिक्षा से जुड़े अनुभवों, नवाचारों तथा शिक्षकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को पाठकों तक पहुँचाना है।

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख, कहानियाँ, चित्र तथा अन्य सामग्री के सर्वाधिकार संबंधित लेखक एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। टीचर्स ऑफ़ बिहार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भी भाग को किसी भी रूप में—जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से—पुनः प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।

यह पत्रिका केवल पठन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। इसका किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग या विक्रय करना वर्जित है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके लिए पूर्णतः लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं; इन विचारों से प्रकाशक या संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रज्ञानिका टीम

प्रधान संपादक
डॉ० चंदन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

संपादक
शुभी श्रीवास्तव
राजकीय मध्य विद्यालय,
जांता पछियारी, गायघाट, मुज़फ्फरपुर

संपादक
डॉ० पूनम कुमारी
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां, रघुनाथपुर, सिवान

पाठ–शोधक
डॉ०विनोद कुमार उपाध्याय
रा० आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

तकनीकी सहयोग
इंजि० शिवेंद्र प्रकाश सुमन
इंजीनियर, मुज़फ्फरपुर

प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शन
शिव कुमार (फाउंडर : टीचर्स ऑफ बिहार)
उ० म० वि० नारायणपुर, विक्रम, पटना

सहयोगी

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन,
रघुनाथपुर, सीवान

रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया,
फारबिसगंज, अररिया

मधु प्रिया
प्राथमिक विद्यालय नवटोलिया ब्रह्मज्ञानी,
भवानीपुर, पूर्णिया

मृत्युंजयम् कुमार
उ० म० वि० नवाबगंज ,समेली ,
कटिहार

केशव कुमार
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू , मुरौल ,
मुज़फ्फरपुर

अजय कुमार मीत
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी ,कोढ़ा ,
कटिहार

मृत्युंजय कुमार
एन.पी.एस. खुटौना यादव टोला , पताही,
पूर्वी चंपारण

अभिषेक कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा,
मुजफ्फरपुर

पुष्पा प्रसाद
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट,
गोपालगंज

अनुक्रमणिका

	पेज संख्या
संपादक	**5-6**
प्रधान संपादक की कलम से : डॉ चंदन श्रीवास्तव	5
संपादक : 1) शुभी श्रीवास्तव।	6
2) डॉ पूनम कुमारी।	6
विद्यालय गाथा	**7-9**
मेरे विद्यालय की बदलती छवि : शुभम कुमार	8
शिक्षक गाथा	**10-16**
शिक्षा और समाजसेवा के धनी : मुकेश कुमार।	11
ब्लैकबोर्ड हुआ रचनात्मक : रंजेश कुमार	13
चाह और जुनून से बदली चहक की कक्षा : अभिषेक कुमार	15
छात्र गाथा	**17-18**
विद्यालय में अनुशासन की पहचान : अमृता - ज्योति गौतम।	18
डिजिटल दुनिया	**19-22**
माइक्रोसॉफ्ट कॉपिलोट , क्लाउड AI , POE AI : इं० शिवेंद्र प्रकाश सुमन	20
राष्ट्रीय शिक्षा नीति	**23-25**
सर्वांगीण विकास NEP के साथ : शुभी श्रीवास्तव	24
नवाचार	**26-27**
छात्र नेतृत्व में पुस्तकालय संचालन : गगन कुमार।	27
साहित्य	**28-31**
ऋतुराज के आगमन पर : विकास कुमार साव	29
सातवां स्थापना दिवस टी. ओ. बी. का : मृत्युंजय कुमार	30
अपना सूरज स्वयं बन जाओ : आशीष अम्बर	30
सोनपुर मेले की एक अविस्मरणीय याद : भीड़ , बिछड़ना और वो अटूट साथ - डॉ० पूनम कुमारी	31
विविध	**32-38**
डिजिटल चौखट पर बिहार : संतोष कुमार शर्मा	31
जल संकट: समस्या एवं निदान - आशीष अम्बर	34
पटना का गोलघर - एक ऐतिहासिक स्मारक : हर्ष नारायण दास	35
मैं शिक्षक कब बना : राकेश कुमार	37
सुर्खियाँ	**39-42**
फोटो ऑफ द डे	**43-45**

प्रधान संपादक की कलम से

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के वर्तमान और भविष्य के निर्माण की आधारशिला है। शिक्षक अपनी सृजनशीलता, समर्पण और नवाचार के माध्यम से शिक्षा को जीवंत बनाते हैं। इसी भावना को केंद्र में रखकर “प्रज्ञानिका” का यह अंक प्रस्तुत किया जा रहा है, जो बिहार के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयों में हो रहे प्रेरक प्रयासों की रचनात्मक प्रस्तुति है। इस अंक में शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण विधियाँ, विद्यार्थियों की प्रेरक उपलब्धियाँ, विद्यालयों में हो रहे सकारात्मक परिवर्तन तथा शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीकों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभाव को विभिन्न गाथा-खण्डों में समाहित किया गया है। यह केवल लेखों का संकलन नहीं, बल्कि उस सतत प्रयास का प्रतिबिंब है जिसके माध्यम से बिहार के विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों से उत्कृष्ट शिक्षण वातावरण का निर्माण हो रहा है।

हमें विश्वास है कि “प्रज्ञानिका” का यह अंक शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक सोच, नवाचार और सहयोग की भावना को और सशक्त करेगा। सभी रचनाकारों, सहयोगियों और पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ कि वे इसी प्रकार ज्ञान, सृजन और परिवर्तन की इस यात्रा को आगे बढ़ाते रहें।

हमारे लिए पाठकों की सहभागिता और उनके विचार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। सभी सुधि पाठकों से विनम्र आग्रह है कि वे अपने बहुमूल्य सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ अवश्य साझा करें, ताकि ‘प्रज्ञानिका’ को और अधिक समृद्ध, उपयोगी तथा प्रेरणादायी बनाया जा सके।

आपके स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन के लिए सधन्यवाद।

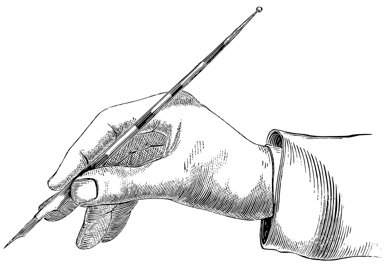

प्रधान संपादक

चन्दन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

संपादकीय

शुभी श्रीवास्तव

डॉ० पूनम कुमारी

जनवरी से मार्च अंक के इस त्रैमासिक संस्करण में हम पुनः उसी संकल्प के साथ उपस्थित हैं, जिसके केंद्र में हमारे बिहार के विद्यालयों की जीवंत शैक्षिक साधना और शिक्षकों की निष्ठामयी तपश्चर्या प्रतिष्ठित है। यह पत्रिका केवल लेखों और कविताओं का संकलन नहीं, अपितु शिक्षण–क्षेत्र में घटित उन सूक्ष्म किंतु प्रभावी परिवर्तनों का प्रामाणिक अभिलेख है, जो हमारे शिक्षकों के समर्पण, सृजनशीलता और दायित्वबोध से संभव हुए हैं। 'विद्यालय गाथा', 'छात्र गाथा' और 'शिक्षक गाथा' जैसे स्तंभों के माध्यम से हम उन प्रेरक अनुभवों को प्रकाश में ला रहे हैं, जो शिक्षा को केवल पाठ्यचर्या तक सीमित न रखकर संस्कार, संवेदना और सामाजिक चेतना का व्यापक आयाम प्रदान करते हैं। यह अंक शिक्षकीय अनुभवों की अनुभूति, आत्ममंथन और नवाचार की उज्ज्वल अभिव्यक्ति है—जो न केवल शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा, अपितु समूचे शैक्षिक समाज के लिए पथप्रदर्शक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित

शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण और कौशल का विकास है। इसी ध्येय वाक्य को आत्मसात करते हुए 'टीचर्स ऑफ बिहार' परिवार अपनी इस विशेष ई–पत्रिका 'प्रज्ञानिका' का चतुर्थ संस्करण सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा है। यह ई–पत्रिका महज पन्नों का संकलन नहीं, बल्कि बिहार के सरकारी विद्यालयों में हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों का जीवंत दस्तावेज़ है। हमारा यह मानना है कि बिहार के शिक्षकों में वह मेधा है जो सीमित संसाधनों में भी सर्वश्रेष्ठ परिणाम दे सकती है। यह पत्रिका बिहार के शिक्षकों और छात्रों के विचारों, कविताओं, लेखों और शोधों का एक अनूठा संगम है।तो आइए, हम–सब मिलकर बिहार के शैक्षिक विकास के सहयोगी बनें।

"परिवर्तन की शुरुआत हमसे है और यह पत्रिका उसी बदलाव की एक गूँज है।"

शुभकामनाओं सहित

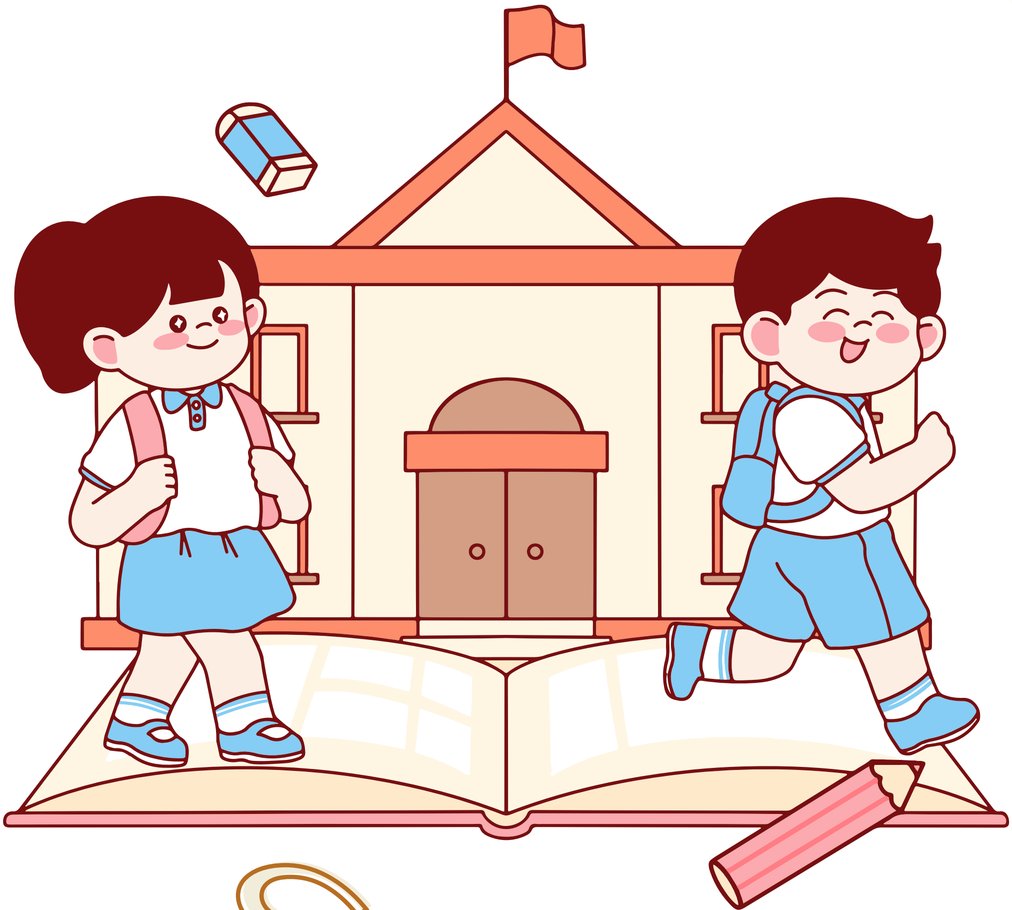

विद्यालय गाथा

विद्यालय गाथा

मेरे विद्यालय की बदलती छवि

शुभम कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय विश्वम्भरपट्टी पश्चिमी
कटरा , मुज़फ्फरपुर

वर्णित किया जाए तो सभी सरकारी विद्यालयों का प्रारूप एक समान होता है किन्तु प्रत्येक विद्यालय की आत्मा उसे भिन्न बनाती है।विद्यालय की आत्मा को निखारने का पूर्ण श्रेय जाता है उस विद्यालय के शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं को। एक शिक्षक की अपने कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठा सम्पूर्ण विद्यालय के रंग - रूप को परिवर्तित करने की क्षमता रखती है। यह परिवर्तन समान अवसर मिल रहे विद्यालयों में भी किसी एक विद्यालय को उत्कृष्ट बनाता है।आवश्यकता है तो एकमात्र उस जज़्बे की जो कुछ नया करने में भयभीत होने के बजाय अपने स्वप्नों के आदर्श विद्यालय की परिकल्पना को साकार करने के उत्साह से दहाड़े।

ऐसे ही एक विद्यालय की बदलती छवि की कहानी आती है मुज़फ्फरपुर के कटरा प्रखंड में स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय विश्वम्भरपट्टी पश्चिमी से जिसमें मैंने वांछित बदलाव लाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया तथा इस कार्य में साथ दिया मेरे अन्य साथी शिक्षकों ने ।

मेरी परिकल्पना में तो एक आदर्श विद्यालय जिसे हम शिक्षा का मंदिर कहते हैं,वही है जिसमें शैक्षणिक कार्यों से लेकर विद्यालय के संचालन तक सब सुव्यवस्थित शैली में हो। सैन्य पृष्ठभूमि से होने के कारण मैं व्यक्तिगत रूप से इसका आरंभ विद्यालय में शिक्षा प्रणाली के अनुशासित होने से समझता हूँ, फिर चाहे वे छात्र हों या शिक्षक ।

1) अनुशासन

मेरे विद्यालय में पहला परिवर्तन था छात्रों का अनुशासित होना। जहाँ वे बिना पंक्तिबद्ध हुए झुंड बना के असमयनिष्ठ रूप से कभी प्रार्थना करते दिखते थे तो कभी कक्षा के दौरान विद्यालय मैदान में।वहीं मैने उन्हें समय का पाबंद बनाया, प्रार्थना का औचित्य समझाते हुए उन्हें नियमों का पालन करना, आत्म-नियंत्रण रखना और सही तरीके से व्यवहार करना सिखाया ताकि वे अपने-अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

2) उपस्थिति में बढ़ोत्तरी

मेरे विद्यालय में छात्रों की तेजी से गिरती हुई उपस्थिति हम सभी के लिए चिंताजनक विषय था।मैंने और मेरे सभी साथियों ने 'बच्चों के साथ बच्चा बन के' उन्हें सिखाना शुरू किया। इसके लिए कभी कहानी विधि तो कभी खेल विधि का सहारा लिया। इससे उनकी शिक्षा में रुचि तीव्रता से बढ़ती गई, जिसके परिणामस्वरूप मेरे विद्यालय में उपस्थिति और नामांकन दोनों के दर में तेज़ी से वृद्धि होने लगी।

3) सुरक्षित शनिवार बना मेरे विद्यालय हेतु वरदान

जहाँ मेरे विद्यालय में हर शनिवार को बच्चे सामान्य दिनों की तरह पढ़ाई किया करते थे, मैंने उन्हें शनिवार के आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा निर्धारित संबंधित विषय को अभ्यास कार्य विधि (ड्रिल मैथड) द्वारा समझाया। उदाहरण के लिए मैंने उन्हें आगजनी के वक़्त अग्निशामक यंत्र का प्रयोग करना सिखाया तथा भूकंप के वक़्त झुको, ढको, बैठो का नियम समझाया।

4) विद्यालय संरचना में परिवर्तन

मैंने अपने विद्यालय की संरचना में मौलिक परिवर्तन करते हुए प्रधानाध्यापक को शुष्क मृदाभूमि पर ईंटों की परत बिछाने का सुझाव दिया जिसे उन्होंने सहर्ष क्रियान्वित किया।

5) छात्रों द्वारा परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन

मैंने देखा कि छात्र विद्यालय के बाद खेत और घर के कार्यों में इतना लिप्त हो जाते हैं कि उनका ध्यान फिर पढ़ाई पर रह ही नहीं जाता और इसलिए वो पढ़ाये गये प्रकरण को भी भूल जाया करते हैं।इससे उनके परीक्षा में अंक अत्यधिक कम आते हैं। अतएव मैंने छात्रों के उसी पाठ को पुनः दोहराने पे अधिक बल दिया। जिससे अब छात्रों को कक्षा में ही विषयवस्तु कंठस्थ रहने लगी। बढ़ती प्रतिस्पर्धा हेतु अपने छात्रों को तैयार करने के लिए मैंने उन्हें अंग्रेज़ी तथा हिंदी दोनों भाषाओं में पढ़ाना शुरू किया। मिशन दक्ष की कक्षाओं में मैंने छात्रों को न केवल संख्यात्मक ज्ञान दिया अपितु उन्हें आर्थिक रूप से सहायता भी प्रदान की।

6) खेल भावना से परिचित होते मेरे विद्यालय के छात्र

मैंने 'मशाल कार्यक्रम' के अंतर्गत विद्यार्थियों को दौड़, लंबी कूद, गोला फेंक आदि विविध क्रीड़ा-स्पर्धाओं में अधिकतम सहभागिता हेतु प्रेरित कर उनमें खेलभावना तथा सामूहिक समन्वय की उत्कृष्ट चेतना विकसित की।

7) TLM ने बढ़ाई मेरे विद्यालय में प्राथमिक साक्षरता दर

छात्रों में प्राथमिक शिक्षा को लेकर घटती रुचि देखते हुए प्राथमिक शिक्षक होने के नाते मैंने तथा मेरे साथियों ने विद्यालय की इस धूमिल होती हुई छवि को बदलने की ठानी। BALA (बिल्डिंग ऐज़ लर्निंग ऐड) के अंतर्गत हमने अपनी-अपनी कक्षाओं की दीवारों को कहीं संख्याओं के पहाड़े से तो कहीं अक्षर ज्ञान हेतु तस्वीरों को चस्पा किया। शिक्षण अधिगम सामग्री की सहायता से मैंने बच्चों को इतनी तल्लीनता से शिक्षित करना शुरू किया कि मुझे दो बार राज्य स्तरीय TLM मेला में प्रतिभाग लेने का तथा बिहार दिवस 2025 में अपने TLM को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

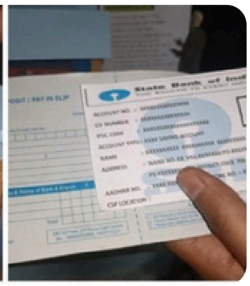

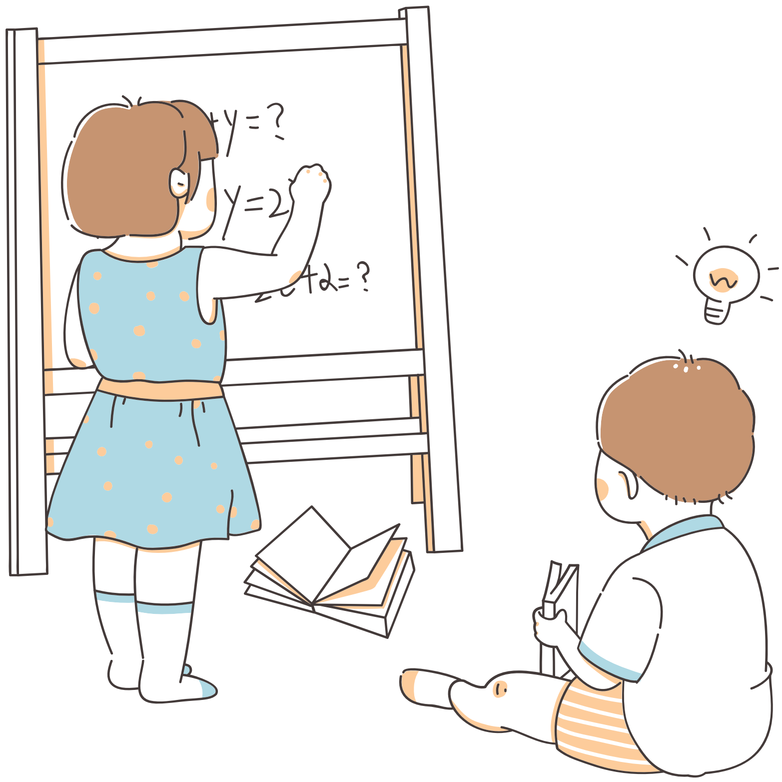

शिक्षक गाथा

शिक्षक गाथा - 1
शिक्षा और समाजसेवा के धनी

मुकेश कुमार
उत्क्रमित उच्च विद्यालय कोरिया
चांदन, बांका

उत्क्रमित मध्य विद्यालय कोरिया, चांदन, बाँका (बिहार) के शिक्षक श्री हीरालाल यादव एक ऐसी विराट शख्सियत हैं, जिन्होंने अपना जीवन दो महान उद्देश्यों को समर्पित किया है – कक्षा में बच्चों का भविष्य गढ़ना और समाज में शिक्षा के प्रकाश को फैलाना। शिक्षक के रूप में उनकी निष्ठा और उनकी नेतृत्त्व क्षमता, दोनों ही उनके समर्पण और दूरदर्शिता का प्रमाण हैं।

श्री हीरालाल यादव जिस विद्यालय में पढ़ाते हैं, वह बिहार के बाँका जिले के एक ग्रामीण क्षेत्र कोरिया, चांदन में स्थित है। ऐसे अंचल में जहाँ संसाधन सीमित हैं, एक शिक्षक की भूमिका सिर्फ पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं रहती। श्री यादव ने इस विद्यालय को केवल पढ़ाई-लिखाई का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और नैतिक मूल्यों का केंद्र बना दिया है। उनकी कक्षा में बच्चे न सिर्फ अक्षर ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन और समाज के प्रति दायित्व की शिक्षा भी पाते हैं। उनका मानना है कि शिक्षा सशक्तिकरण का वह हथियार है, जो गरीबी और पिछड़ेपन के चक्र को तोड़ सकता है।

> शिक्षक हीरालाल यादव
> " शिक्षा सशक्तिकरण का वह हथियार है जो गरीबी और पिछड़ेपन के चक्र को तोड़ता है। "

शिक्षक के रूप में अपने कर्त्तव्य के अलावा, श्री हीरालाल यादव उत्क्रमित मध्य विद्यालय संघ के प्रदेश सचिव के रूप में एक बड़ी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उनका नेतृत्व सहयोग, संवाद और न्याय पर आधारित है। वे न केवल शिक्षकों की व्यावसायिक माँगों को उचित मंच तक पहुँचाते हैं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, विद्यालयों के बुनियादी ढाँचे के विकास और शिक्षण के नवीन तरीकों को प्रोत्साहन देने के लिए भी प्रयासरत हैं। उनका यह संघर्ष केवल शिक्षकों के लिए ही नहीं, बल्कि अंततः लाखों छात्र-छात्राओं के बेहतर भविष्य के लिए है।

शिक्षक
हीरालाल यादव

श्री हीरालाल यादव का व्यक्तित्व केवल स्कूल और संगठन तक सीमित नहीं है। वह एक सक्रिय समाजसेवक के रूप में भी जाने जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार, स्वच्छता अभियान, सामाजिक समरसता और युवाओं को सही दिशा देने के लिए उनके प्रयास सराहनीय हैं। उनका जीवन इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि एक शिक्षक समाज का निर्माता होता है और उसकी भूमिका चहारदीवारी से बहुत आगे तक विस्तृत होती है। शिक्षक हीरालाल यादव शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसी मिशाल हैं, जो सेवा, नेतृत्त्व और समर्पण के समन्वय से बनती है। वे न केवल अपने विद्यालय के बच्चों के लिए, बल्कि पूरे शिक्षक समुदाय और अंततः समाज के लिए एक मार्गदर्शक स्तंभ की भूमिका निभा रहे हैं। उनका कार्य हमें यह याद दिलाता है कि वास्तविक शिक्षा वह है जो चरित्र निर्माण करे, समाज का कल्याण करे और एक बेहतर दुनिया के निर्माण की प्रेरणा दे। उनके अथक प्रयास और समर्पण के लिए वे कोरिया, चांदन ही नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा जगत के लिए प्रेरणा के पात्र हैं।

ऐसे ही और गाथाओं को पढ़ने के लिए दिए QR कोड को स्कैन करें

शिक्षक गाथा - 2

ब्लैकबोर्ड हुआ रचनात्मक

रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया,
फारबिसगंज, अररिया

टीचर्स ऑफ़ बिहार द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक ई-पत्रिका प्रज्ञानिका के इस अंक मे इस बार 'शिक्षक गाथा' में हम आपको ऐसे नवाचारी शिक्षक से परिचित करा रहे हैं, जिन्होंने साधारण से दिखने वाले ब्लैकबोर्ड को बच्चों की रचनात्मकता, जिज्ञासा और समाधान क्षमता का सशक्त माध्यम बना दिया है। सुपौल जिले के छातापुर प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय सरस्वतीपुर के शिक्षक मोहम्मद रुस्तम अली ने अपने शैक्षिक जीवन में यह सिद्ध किया है कि –"आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, बस उसे पहचानने और विकसित करने की दृष्टि चाहिए।" वे शिक्षा नहीं देते बल्कि सीखने का अनुभव कराते हैं । अक्सर कक्षा में शिक्षण केवल सिद्धांतों तक सीमित रह जाता है।किताब पढ़ी, प्रश्न हल किए, और पाठ समाप्त।लेकिन रुस्तम अली ने इस परंपरागत पद्धति से अलग राह चुनी।वे बच्चों को स्वयं ब्लैकबोर्ड पर आने, लिखने, चित्र बनाने, समस्याएँ चिह्नित करने और उनके समाधान खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका मानना है:--ब्लैकबोर्ड शिक्षक का दर्पण ही नहीं, बल्कि बच्चों के विचारों की प्रयोगशाला भी है ।

> ब्लैकबोर्ड को बनाया नवाचार का माध्यम
> एक प्रेरक शिक्षक की कहानी

शिक्षक मोहम्मद रुस्तम अली

ब्लैकबोर्ड बना "सोचने का टूल"-

रुस्तम अली बच्चों से कहते हैं कि वे अपने आसपास की समस्याओं को समझें–

- गाँव की परिस्थिति
- दैनिक जीवन की गणित
- भाषा का प्रयोग
- सामाजिक व्यवहार

और फिर ब्लैकबोर्ड पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करें। इस प्रक्रिया में बच्चे केवल पढ़ते नहीं, बल्कि सोचना, विश्लेषण करना और समाधान करना भी सीखते हैं।

गतिविधि आधारित सीख –

ब्लैकबोर्ड आधारित छोटी-छोटी गतिविधियों से बच्चों की सीखने में रुचि बढ़ाना –यह प्रयास किसी जादू से कम नहीं।

- कमजोर छात्र भी सक्रिय होने लगे
- बच्चियों की भागीदारी बढ़ी
- कक्षा संवादमय बन गई
- सीखना बोझ नहीं, आनंद बन गया

विद्यालय का सहयोग बना शक्ति-

विद्यालय के प्रधान शिक्षक सरोज कुमार पासवान से उन्हें निरंतर प्रोत्साहन और स्नेह मिलता रहा, जिसने उनके प्रयासों को दिशा दी। ग्रामीण परिवेश में नवाचार करना आसान नहीं होता । कई बार सामाजिक रूढ़ियाँ, संसाधनों की कमी और अभिभावकों की शंकाएँ भी सामने आती हैं। फिर भी, उन्होंने हार नहीं मानी। जो ठान लेते हैं, वही बदलाव की कहानी लिखते हैं।

क्यों हैं रुस्तम अली विशेष-

- ■ उपलब्ध संसाधनों से नवाचार
- ■ ब्लैकबोर्ड का पुनर्परिभाषित उपयोग
- ■ बच्चों में आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति का विकास
- ■ गतिविधि आधारित शिक्षण का सफल प्रयोग
- ■ ग्रामीण शिक्षा में जीवंत मॉडल प्रस्तुत

ऐसे शिक्षक विरले ही मिलते हैं, जो साधनों की कमी को बाधा नहीं, अवसर बना देते हैं। टीचर्स ऑफ़ बिहार का उद्देश्य ऐसे ही शिक्षकों की पहचान करना है, ताकि अधिक-से-अधिक शिक्षक उनके कार्यों से प्रेरणा लें और शिक्षा को जीवंत बनाएँ। रुस्तम अली जैसे शिक्षक ही शिक्षा में वास्तविक परिवर्तन के वाहक हैं।

शिक्षक गाथा -3

चाह और जुनून से बदली चहक की कक्षा

अभिषेक कुमार
उ० म० वि० गोपालपुर नेउरा
मुजफ्फरपुर

बिहार के मुजफ्फरपुर जिला अवस्थित प्राथमिक विद्यालय भरतनगर (गायघाट) का वह प्रांगण अपनी स्थिति और अस्तित्व को कदाचित ढो रहा था। यहाँ संभावित संसाधन भी थे और इच्छुक बच्चे भी। बस कमी थी कि बच्चों से जुड़ने और उन्हें समझने वाला कोई नही था।

नवंबर, साल 2023 का वह दिन.. जब पहली बार बच्चों को लगा कि कोई उन जैसा उनके विद्यालय आया है क्योंकि इसी दिन शिक्षिका प्रेरणा का इस विद्यालय में पदस्थापन हुआ था। कहा जाए तो अपनी परिपक्वता को विद्यालय से अलग कर प्रांगण में उनके साथ खुद को आत्मसात करने वाला।

जी हां, एक शिक्षिका के पदग्रहण के साथ ही सुश्री प्रेरणा का यह उद्देश्य रहा कि वह बच्चों के लिए वो सारी गतिविधियाँ और आजादी लाएंगी जो कल वह पाने की कोशिश में रहती थीं। अपने नए पदस्थापन के साथ ही उन्हें महसूस हुआ कि विद्यालय अभी पूर्णतः प्राथमिक विद्यालय के तौर पर दृश्यमान नहीं है। फिर क्या, शिक्षिका ने इसे एक अवसर के रूप में देखा और अपने हाथ रंगों से भरकर बच्चों के साथ विद्यालय के कोने -कोने को सजाने में लग गई !

> विद्यालय तौर पर सहायता सीमित थी, मेहनत थोड़ी ज्यादा थी लेकिन इन सबसे बड़ी थी " जुनून / चाहत "

मेहनत और जुनून के इस संगम ने अब विद्यालय को अपेक्षाकृत आकर्षक बनाया।कुछ समय बाद अब वही कक्षाएँ अधिक आकर्षक और क्रियाशील दिखने लगी। चूँकि प्राथमिक अवस्था एक ऐसी अवस्था होती है जहाँ बच्चे दृश्य आधारित चीजों की तरफ अधिक मुड़ना पसंद करते हैं। धरातल पर भी अब ऐसा महसूस होने लगा था। इस तरह शिक्षिका ने अब अगली कड़ी के तौर पर कला और नाट्य को अपनी शिक्षण शैली में अधिक महत्त्व देना प्रारंभ किया। हर नए अध्याय को कलात्मक तरीके से पेश करने लगीं जहाँ बच्चों की सहभागिता अनिवार्य रूप से किसी किरदार के तौर पर रखी जाती हों। परिणामस्वरूप अब बच्चे नए अध्याय को लेकर डर के विपरीत अधिक उत्साहित रहने लगे। कक्षा-कक्ष के अध्यायों में उनकी नाटकीय सहभागिता अब उनके अध्यायों को स्थायीकरण देने लगी। हर नए दिन उनकी डिमांड अलग-अलग होने लगी।

"आज ये पढ़ेंगे...वो पढ़ेंगे.."

यही शिक्षिका के तौर पर उन्हें अहसास हुआ कि शिक्षक के मेहनत में अगर सच्चाई हो तो बच्चे भी रुचि के साथ पढ़ाई कर सकते हैं।बच्चों द्वारा जबरदस्ती उन्हें अपनी कक्षा में ले जाने को एक दूसरे से झगड़ लेना सबसे बड़ी उपलब्धि रही। प्रतिदिन उनके साथ मिलकर उनके खेलों में उनसे जुड़ना,उन्हें बच्चों के और करीब ला दिया।

गायघाट, मुजफ्फरपुर के प्राथमिक विद्यालय भरतनगर की नई पहचान गढ़ती कुमारी प्रेरणा

अब उनका जुड़ाव उनसे अधिक विस्तृत हो चुका था। अंततः एक दिन स्व मूल्यांकन के तौर पर सुश्री प्रेरणा ने पीछे देखा तो पाया अब वही बच्चे काफी कॉन्फिडेंट हो चुके थे जो कल कक्षा में डरे-डरे और सहमे-सहमे हुआ करते थे यानी बस एक साथ ने उनके पूरे व्यक्तिव को बदल डाला | बच्चे अब बदल चुके थे, अगली बारी उनके दिनचर्या की थी। चूंकि विद्यालय क्षेत्र ग्रामीण स्तर से अधिक जुड़ा था, अभिभावक में शिक्षा का स्तर निम्न था जिससे वे बच्चों के प्रति अधिक सगज नहीं रह पाते थे तो क्यूं ना बच्चे को ही अधिक सजग बनाया जाए। फिर शिक्षिका ने कई अलग विद्यालयों और तस्वीरों का उदाहरण देकर बच्चों को प्रेरित करना शुरू किया। अचानक बच्चों में आयी क्रांति ने उनके अभिभावकों में भी थोड़ी हलचल ला दी, तदुपरांत अब उन्हें भी प्रेरित करने का मौका मिला। बातचीत के दौरान यह भी पहलू सामने आया कि अभिभावकों का विश्वास निजी विद्यालय की तरफ विशेष था।

बतौर शिक्षिका अब यह एक बड़ी चुनौती दिखी और इसे पार करने पर ही अभिभावक का सहयोग पाया जा सकता था। उस वक्त इसका एक मात्र तरीका था बच्चों को उस लायक तैयार करना और फिर बिना देरी किए बच्चों पर मेहनत शुरू की गई। गाँव में निजी विद्यालय की महानता देखी जा रही थी। इन्होंने अपने विद्यालय को ही निजी विद्यालय के स्वरूप में ढाल दिया और इसी कसौटी पर अब वे बच्चे खरे उतरने लगे जिससे अभिभावक का विश्वास मजबूत हुआ और फिर बहुत जल्द ही एक समय आया जब अभिभावकों के सहयोग से बच्चे पूर्ण पोशाक में दिखने लगे।

सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद कुमारी प्रेरणा ने सिद्ध कर दिया कि सच्ची लगन, सकारात्मक सोच और विद्यार्थियों के प्रति निःस्वार्थ प्रेम से शिक्षण पद्धति में यथोचित परिवर्तन लाया जा सकता है।

उनके प्रयासों ने न केवल बच्चों के भविष्य को संवारने का कार्य किया, बल्कि पूरे विद्यालय और समुदाय को प्रेरित भी किया। उनकी सफलता इस बात का प्रमाण है कि एक प्रतिबद्ध शिक्षिका वास्तव में समाज के निर्माण की सबसे मजबूत आधारशिला होती है।

छात्र गाथा

छात्र गाथा-1

विद्यालय में अनुशासन की पहचान : अमृता

ज्योति गौतम
प्राथमिकविद्यालय मिल टोला वार्ड नं ११
प्रखंड डुमरा,जिला सीतामढ़ी

निर्जला उपवास रखकर विद्यालय आना और यह कहना कि "माँ शारदे की विदाई के बाद ही अन्न ग्रहण करूँगी", उसकी गहरी श्रद्धा और विद्यालय के प्रति उसके लगाव को दर्शाता है। वह एक ऐसी छात्रा है जिसका मन घर से ज्यादा विद्यालय की गतिविधियों में लगता है।

अमृता की सीखने की ललक उसे सबसे खास बनाती है।

संविधान की प्रस्तावना:

विद्यालय में जब संविधान की प्रस्तावना का पाठ शुरू हुआ तो अमृता ने सबसे पहले इसे कंठस्थ कर पूरे स्कूल के सामने एक 'रोल मॉडल' के रूप में खुद को स्थापित किया।

अखबार वाचन (PAPER READING):

दिसंबर से शुरू हुए समाचार वाचन अभियान में अमृता ने अपनी स्पष्ट और ओजस्वी आवाज से चेतनासत्र को एक नई ऊर्जा दी।

सांस्कृतिक प्रतिभा:

पढ़ाई और अनुशासन के साथ-साथ अमृता एक बेहतरीन डांसर भी है, जो किसी भी अवसर पर अपनी कला से सबको मंत्रमुग्ध कर देती है।

भावुक विदाई और एक प्यारा वादा:

वर्ग-5 की शिक्षा पूरी कर अमृता जल्द ही नए सफर पर निकल जाएगी। उसे इस बात की कमी खल रही थी कि उसका जन्मदिन विद्यालय के सत्र के बाद आता है, इसलिए उसने अभी से वादा किया है कि वह जाने से पहले अपने हिस्से की खुशियाँ (टॉफी) सभी सहपाठियों के साथ साझा करेगी।

संदेश:

अमृता जैसे विद्यार्थी ही किसी भी विद्यालय की असली पहचान होते हैं। हमें गर्व है कि वह हमारे विद्यालय का हिस्सा है। हम उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करते हैं कि वह जिस भी क्षेत्र में जाए, वहाँ का नेतृत्व करे और सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करे।

वह एक ऐसी छात्रा है जिसके लिए विद्यालय ही उसका संसार है।

बहुमुखी प्रतिभा और नेतृत्व की धनी:

विद्यालय की 'बाल संसद' की प्रधानमंत्री और अपनी कक्षा की

कुशल मॉनिटर—अमृता कुमारी केवल एक नाम नहीं, बल्कि हमारे विद्यालय की अनुशासन और नेतृत्व की पहचान है। अमृता में जिम्मेदारी उठाने का जो जज्बा है, वह काबिले तारीफ है। चाहे चेतनासत्र का संचालन हो या कक्षा का प्रबंधन, अमृता की आवाज में एक आत्मविश्वास झलकता है जो अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

संस्कार और अटूट कर्तव्यनिष्ठा:

अमृता के लिए शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है, उसके संस्कारों में भी झलकती है। इस वर्ष सरस्वती पूजा के दौरान उसका एक अलग रूप देखने को मिला। विसर्जन के दिन निर्जला उपवास रखकर विद्यालय आना और यह कहना कि "माँ शारदे की विदाई के बाद ही अन्न ग्रहण करूँगी", उसकी गहरी श्रद्धा और विद्यालय के प्रति उसके लगाव को दर्शाता है। वह एक ऐसी छात्रा है जिसका मन घर से ज्यादा विद्यालय की गतिविधियों में लगता है।

उपलब्धियाँ जो मिसाल बनीं:

अमृता की सीखने की ललक उसे सबसे खास बनाती है।

डिजिटल दुनियाँ

डिजिटल दुनिया -1

Microsoft Copilot

COPILOT

इंजि० शिवेंद्र प्रकाश सुमन
इंजीनियर , मुज़फ्फरपुर

Microsoft Copilot एक AI आधारित सहायक है जिसे Microsoft द्वारा विकसित किया गया है। यह AI उपयोगकर्त्ताओं को सवालों के जवाब देने, लेख लिखने, सारांश बनाने, कोड लिखने और जानकारी खोजने में मदद करता है। यह विशेष रूप से शिक्षकों, छात्रों, शोधकर्त्ताओं और कंटेंट क्रिएटर्स के लिए बहुत उपयोगी है।

प्रमुख विशेषताएँ

प्राकृतिक भाषा में सवाल पूछने और जवाब पाने की सुविधा।

लेख, नोट्स, ई-मेल और असाइनमेंट तैयार करने में मदद।

इंटरनेट से ताज़ा जानकारी खोजने की क्षमता।

कोडिंग और तकनीकी प्रश्नों में सहायता।

चित्र (Images) बनाने की सुविधा।

24×7 मोबाइल, कंप्यूटर या टैबलेट पर उपलब्ध।

Microsoft Copilot का उपयोग कैसे करें?

वेबसाइट पर जाएँ – https://copilot.microsoft.com की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएँ।

अपना प्रश्न लिखें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।

शिक्षक अपने छात्रों को असाइनमेंट दे सकते हैं और पढ़ाने या सीखने से जुड़ी तस्वीरें भी बना सकते हैं।

शिक्षक या छात्र अपनी तथा अपने विद्यालय की तस्वीरों का उपयोग करके आकर्षक शैक्षणिक चित्र बना सकते हैं। इसके लिए नीचे दिए गए प्रॉम्प्ट को कॉपी-पेस्ट करें और अपनी फोटो अपलोड करें। AI की मदद से आप अपने सरकारी विद्यालय के सीखने-सिखाने के माहौल को दर्शाती सुंदर और प्रेरणादायक तस्वीर तैयार कर सकते हैं।

Create a realistic image of an Indian government school classroom where a teacher is teaching students. Use the teacher’s photo and students’ photos to show them studying together in a positive learning environment, blackboard, books, and bright classroom, inspiring government school education.

Microsoft Copilot ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म: https://copilot.microsoft.com

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

डिजिटल दुनिया-2

Claude AI

Claude

Claude AI एक आधुनिक AI चैटबॉट है जिसे Anthropic कंपनी ने बनाया है। यह विशेष रूप से लंबे लेख पढ़ने, सारांश बनाने, शोध करने और लेखन कार्यों में बहुत उपयोगी है। शिक्षक और छात्र इसे पढ़ाई और शोध के लिए आसानी से उपयोग कर सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

लंबे लेख या PDF का सारांश बनाने की क्षमता।

नोट्स, लेख और असाइनमेंट लिखने में मदद।

जटिल विषयों को सरल भाषा में समझाने की क्षमता।

शोध कार्य और प्रोजेक्ट बनाने में सहायता।

सुरक्षित और जिम्मेदार AI डिजाइन।

मुफ्त उपयोग की सुविधा।

Claude AI का उपयोग कैसे करें?

वेबसाइट पर जाएं – https://claude.ai की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएँ।

अपना प्रश्न लिखें – अपनी रुचि और विषय के अनुसार।

उदाहरण:

- "Photosynthesis को आसान भाषा में समझाओ"
- "Class 10 के लिए इतिहास के नोट्स बनाओ"

Claude AI ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://claude.ai

डिजिटल दुनिया-3

Poe AI

Poe

Poe AI एक AI प्लेटफॉर्म है जिसे Quora ने विकसित किया है। इसमें कई प्रकार के AI मॉडल उपलब्ध होते हैं जो सवालों के जवाब देने, लेख लिखने, भाषा अनुवाद करने और पढ़ाई में मदद करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

अलग-अलग AI चैटबॉट्स का उपयोग एक ही प्लेटफॉर्म पर।

लेख, कहानी, नोट्स और असाइनमेंट लिखने में सहायता।

भाषा अनुवाद और व्याकरण सुधार की सुविधा।

छात्रों के लिए पढ़ाई में सहायता।

मोबाइल और कंप्यूटर दोनों पर उपयोग।

मुफ्त संस्करण उपलब्ध।

Poe AI का उपयोग कैसे करें?

वेबसाइट पर जाएं – https://poe.com की आधिकारिक वेबसाइट खोलें।

नि:शुल्क पंजीकरण करें – ईमेल से अकाउंट बनाएँ।

अपना पसंदीदा AI Bot चुनें।

- Poe में कई अलग-अलग AI Bots होते हैं।
- आप अपनी जरूरत के अनुसार Bot चुन सकते हैं, जैसे –
  - पढ़ाई के लिए
  - लेख लिखने के लिए
  - सवालों के जवाब पाने के लिए

AI से सवाल पूछें या काम दें।

नया प्रश्न पूछते रहें।

- Poe AI से आप एक के बाद एक कई प्रश्न पूछ सकते हैं।
- यह पढ़ाई, नोट्स बनाने, प्रोजेक्ट तैयार करने और नई जानकारी सीखने में बहुत मदद करता है।

Poe AI ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म: https://poe.com

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

राष्ट्रीय शिक्षा नीति

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 -1

सर्वांगीण विकास NEP के साथ

NEP 2020

शुभी श्रीवास्तव

गणित-विज्ञान शिक्षिका

राजकीय मध्य विद्यालय जांता पछियारी

गायघाट, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख बिंदु था शिक्षा को जीवन संबंधी गतिविधियों से जोड़ना जिसकी पहल बिहार शिक्षा विभाग ने विभिन्न रूपों में की। शिक्षण-पद्धति में आये इस अद्वितीय परिवर्तन को सर्वाधिक हम शिक्षकों द्वारा अनुभव किया गया है क्योंकि हम शिक्षक ही उस पायदान पर खड़े होते हैं जिसकी एक ओर नीतियों का गठन तो दूसरी ओर नीतियों का क्रियान्वयन देखा जा सकता है।

मैं एक शिक्षिका के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप अपनी शिक्षण योजनाओं में परिवर्तन लाने में अत्यधिक हर्षित तथा गौरवान्वित महसूस करती हूँ क्योंकि शिक्षा के रटन्त स्वरूप को विस्थापित करने तथा स्वत: से कर के सीखने की रूपरेखा को अपनाने के उपरांत मेरा कोई भी छात्र अब ये नहीं कहता कि," मैम, मैं यह भूल गया।" शिक्षा का विस्मरण होना तो मानो अब लुप्त-सा हो गया है। NEP के अनुपालन में मेरे द्वारा किए गए कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन जिसका उल्लेख मैं करना चाहूँगी वे निम्नलिखित हैं :-

1) रोल प्ले शिक्षण पद्धति :

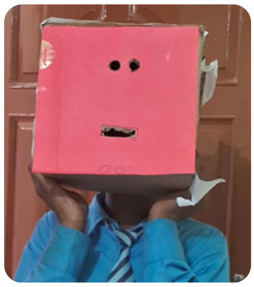

8वीं कक्षा में अंग्रेज़ी पढ़ाने के दौरान मैंने अनुभव किया कि छात्रों की विषय में रुचि कम और भय अधिक है। अत: NEP 2020 में विदित खेल आधारित शिक्षण पद्धति को ध्यान में रखते हुए मैंने हर पाठ को नाटक के रूप में उन्हें समझाना शुरू किया। इसमें कुछ छात्र-छात्रा उस पाठ के पात्र की काल्पनिक भूमिका निभाते हैं। अब अंग्रेज़ी पढ़ाना इतना मनोरंजक प्रतीत होता है, कभी कोई छात्र शेर की तो कभी कोई दानव की नकल करते हुए पूरी कक्षा को हँसी की गूंज से भर देता है।

2) बैगलेस डे :

NEP 2020 की इस पहल की जितनी सराहना की जाए उतनी कम है, अब सप्ताह के हर शनिवार मेरा मुख्य उद्देश्य होता है छात्रों में छिपी कलाओं को निखारना जिससे वे अपने जीवन में कुछ बेहतर कर सकते हैं। उदाहरण हेतु किसी छात्र को संगीत प्रिय है तो किसी को शास्त्रीय नृत्य से लगाव है, किसी को कहानी लिखना पसंद है तो किसी को चित्रकारी। इन सारी कलाओं के जन्मत: आविर्भाव को उचित दिशा प्रदान करने की प्रेरणा हम शिक्षकों को NEP से ही प्राप्त होती है।

3) परियोजना आधारित शिक्षा (PBL) :

गणित-विज्ञान शिक्षिका होने के नाते मैंने अपने विद्यालय में परियोजना आधारित शिक्षा को मूर्त्त रूप दिया। अब चाहे गणित हो या विज्ञान, इन विषयों के किसी भी प्रकरण को मेरे छात्र मात्र परिभाषा के रूप में नहीं समझते अपितु वे उसका वास्तविक जीवन में उपयोग बताने में सक्षम हो गए हैं। कारण कि हर प्रकरण को उन्होंने स्वयं प्रोजेक्ट के माध्यम से स्वयं कर के सीखा है। हाँ, प्रारंभ में कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ा और हो भी क्यों न! कोई भी परिवर्तन भला चुनौती रहित हो ऐसा संभव है क्या ? परंतु अब हर छात्र प्रकरण समझने के उपरांत कुछ-न-कुछ बनाने हेतु उत्साहित रहता है। कभी विज्ञान में विद्युत संबंधी प्रोजेक्ट तो कभी पर्यावरण संबंधी प्रोजेक्ट छात्रों को अधिक जिज्ञासु बनाने की ओर अग्रसर करता है।

निष्कर्ष

NEP 2020 द्वारा किए गए परिवर्तनों से छात्रों के सर्वांगीण विकास की दर बढ़ती जा रही है। Operation Blackboard के अंतर्गत न्यूनतम आवश्यक सुविधाएँ सुनिश्चित कराने से लेकर NEP 2020 में विभिन्न शिक्षण-सामग्री तथा प्रोजेक्ट के द्वारा सीखने तक का सफ़र हमें ये विश्वास दिलाता है कि जल्द ही शिक्षा जगत में हमारा भारत शीर्ष पर होगा।

नवाचार

नवाचार - 1

छात्र नेतृत्त्व में पुस्तकालय संचालन

गगन कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोरदीवा
समस्तीपुर

समस्तीपुर जिले के एक सरकारी मिड्ल स्कूल में बाल संसद में शामिल बच्चों द्वारा पुस्तकालय का संचालन किया जाता है। पुस्तकों को व्यवस्थित कर के रखना, छात्र-छात्राओं को पुस्तकें देना तथा उनसे पुनः पुस्तकें प्राप्त करना, ये सभी कार्य बाल संसद के पुस्तकालय मंत्री एवं पुस्तकालय उपमंत्री बच्चों के नेतृत्त्व में ही किये जाते हैं। हम बात कर रहे हैं समस्तीपुर प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोरदीवा की जहाँ संयोजक शिक्षक गगन कुमार के मार्गदर्शन में बच्चों के ही नेतृत्त्व में पुस्तकालय संचालित किया जाता है। इस पुस्तकालय की स्थापना 20 नवम्बर 2017 को की गई थी तथा इसका नाम दिया गया डॉ एस आर रंगनाथन पुस्तकालय। पुस्तकालय स्थापना के बाद से ही लगातार पुस्तकों की संख्या में वृद्धि होती गयी। शिक्षकों की मदद से बच्चे किताबों का प्रबंध करते हैं। विद्यालय के इस पुस्तकालय में अभी चार हजार से अधिक किताबें हैं जिसमें सामान्य ज्ञान, व्याकरण, शब्दकोश, मनोरंजक कहानियाँ, कविताएँ, महापुरुषों की जीवनी, प्रेरक कहानियों सहित अन्य विधाओं की किताबें भी संग्रहित हैं। विद्यालय के बच्चों की दैनिक समय तालिका में एक घंटी पुस्तकालय के लिए निर्धारित की गयी है जहाँ वे पुस्तकों का स्वयं चयन करके पढ़ने के लिए स्वतंत्र होते हैं। साथ ही पढ़ने के लिए पुस्तकालय से पुस्तक निर्गत कराकर बच्चे अपने घर भी लेकर जाते हैं और पुस्तक पढ़कर पुनः पुस्तकालय में जमा करते हैं।

छात्र नेतृत्त्व में पुस्तकालय संचालन पढ़ने की प्रवृत्ति का विकास करने में सहायक है।
विद्यालय के पुस्तकालय में चार हजार से अधिक पुस्तकों का है संग्रह।
पुस्तकालय को स्थानीय जनप्रतिनिधियों व पुस्तकप्रेमियों से भेंट में मिली हैं किताबें।

विद्यालय के इस पुस्तकालय को स्थानीय जनप्रतिनिधियों, बुद्धिजीवियों व शिक्षा प्रेमियों से उपहार में किताबें मिली हैं। इसके अलावा विद्यालय के शिक्षक भी समय-समय पर पुस्तकालय को भेंट में किताबें दिए हैं। स्थानीय अभिभावक एवं कई पूर्ववर्ती छात्र-छात्राओं ने भी पुस्तकालय को भेंट में किताबें दी हैं।

विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मो. जमालउद्दीन ने बताया कि पुस्तकालय संचालन का कार्य शिक्षकों के मार्गदर्शन में बच्चे ही करते हैं।

इससे बच्चों में आत्मविश्वास के साथ-साथ निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।पुस्तकालय के संयोजक शिक्षक गगन कुमार ने बताया कि बच्चों में पुस्तकों से जुड़ाव बढ़ाने, पढ़ने की प्रवृत्ति का विकास करने, भाषा-कौशल का विकास करने में यह गतिविधि काफी सहायक रही है।

साहित्य

साहित्य -1

ऋतुराज के आगमन पर

विकास कुमार साव
प्रधान शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय
चान्दोडीह बेलहर बाँका

निकल उठीं हैं दिवा-रश्मियाँ
नव प्रभात, नव यौवन मन छाया है,
स्वागत के लिए कूक रही है कोकिला
क्रोड से निकल, विहगों ने स्वागत गीत
गाया है।
वृक्षों की डालियाँ झूम कर कह रही हैं-
आओ ऋतुराज आओ।
पुष्प धरा पर बिछ चुके हैं स्वागत में
आओ यहाँ आसन जमाओ।

अपने कंत के आगमन को बिछाए पलकें
सृष्टि ने, यह कैसा प्रेम-व्यापार किया है!
वसंत दूती के संदेश से पुलकित
इला ने फिर शृंगार किया है।

प्रथम मिलन की मीठी उमंग में
मदन की मेदनी पुलक रही है।
अप्रतिम सौंदर्य की आभा में इला
दुल्हन जैसी दमक रही है।
वंदनवारों से सजी ये धरती
मिला जीवन को अब मोल यहाँ
स्वर्ग आ उतरा है धरा पर
जो कुसुमाकर आए यहाँ।

इस मीठी उमंग में नाच रहे
कलियों के संग-संग भँवरे
सुप्त इच्छाओं के खुले कपाट
प्रिय सान्निध्य में सपने सँवरे
कोंपल निकल उठे तरुओं के
नव प्रभा में; नवजीवन मुस्काया है
स्निग्ध स्पर्श से खिल उठा यौवन
क्लांत हृदय ने नवरत्न पाया है।

रंग-बिरंगी कुसुम कलियों ने
जी-भर उल्लास मनाया है
राधिका के प्रेम में मोहन
कानन में रास रचाया है।
वेदना में जब डूबी सृष्टि
जीवन को तब वेद मिला
छूटा जब सान्निध्य श्याम का
प्रेम का सारा भेद खुला।

इसी विरह की वेदना में
सृष्टि ने उर का संधान किया है।
प्रिय ऋतुराज के आगमन पर
कोकिल प्रिया ने यशोगान किया है।

2. सातवाँ स्थापना दिवस टी.ओ.बी. का

प्रज्ञानिका

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय
खुटौना यादव टोला , पताही,
पूर्वी चम्पारण

देखो, सातवाँ स्थापना दिवस है आया,
टीचर्स ऑफ बिहार परिवार में खुशियों का उजास छाया।
सात वर्षों का यह सफर रहा सुहाना,
शिक्षा के क्षेत्र में रचा गया अनगिनत कारनामा।
शिक्षकों और छात्रों के लिए उत्कृष्ट मंच बना,
सबको साथ लेकर आगे बढ़ने का संकल्प सजा।
आओ मिलकर इस यात्रा को यादगार बनाएँ,
घर-घर शिक्षा का अलख जगाएँ।
शिक्षा का अलख हम सब मिलकर जगाएँगे,
टीचर्स ऑफ बिहार को निरंतर आगे बढ़ाएँगे।
शिक्षा के क्षेत्र में गढ़ता है नया आयाम,
टीचर्स ऑफ बिहार कभी नहीं करता विश्राम।
देश-दुनिया में नवाचार आधारित शिक्षा को बढ़ाएँगे,
टीचर्स ऑफ बिहार के कारवाँ को दूर तक लेकर जाएँगे।
आओ मिलकर दीप जलाएँ,
टीचर्स ऑफ बिहार का स्थापना दिवस मनाएँ।

3. अपना सूरज स्वयं बन जाओ

आशीष अम्बर
उ.म.वि. धनुषी , केवटी
दरभंगा

दूर - दूर तक फैला अंधियारा ,
मन भी व्याकुल, बहुत है पीड़ा ।
फिर भी कई उम्मीदें लेकर,
जीवन-पथ पर चलते जाओ ।
शिक्षा को अपनी ढाल बनाकर,
जग में ज्ञान का प्रकाश फैलाओ ।
जग की बातों को अनदेखा कर,
स्वयं का तुम भविष्य सजाओ ।
जीवन में कब राहें आसान मिलीं,
अध्यवसाय का तुम धूप खिलाओ ।
संघर्ष को अपना संबल बनाकर,
जीवन में मनचाही सफलता पाओ ।
अनाचार और दुराचार को त्यागकर,
अपने अंदर सदाचार बढ़ाओ ।
बीती हुई बातों को भुलाकर,
अपना सूरज स्वयं बन जाओ ।

ऐसे ही और पद्य को पढ़ने के लिए दिए QR कोड को स्कैन करें

4. सोनपुर मेले की एक अविस्मरणीय याद: भीड़, बिछड़ना और वो अटूट साथ

डॉ० पूनम कुमारी
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां, रघुनाथपुर, सिवान

सोनपुर का मेला अपनी रौनक और जलवे के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। इसी विश्वप्रसिद्ध मेले की छटा को अपनी आँखों में बसाने की चाह लिए, मैं अपने पति के साथ सोनपुर रेलवे स्टेशन उतरी। वहाँ से हम पैदल ही मेले की ओर चल पड़े। मन में उत्साह अपने चरम पर था, पर हमें क्या मालूम था कि मेले के शोर के बीच एक ऐसी घटना घटने वाली है, जो इस यात्रा को हमेशा के लिए मेरे जहन में दर्ज कर देगी।

जो लोग सोनपुर स्टेशन से दक्षिण की दिशा से मेले में पैदल प्रवेश करते हैं, वे उस सँकरी पगडंडी से परिचित होंगे। उस रास्ते से अंदर आते ही सबसे पहले चिड़ियों और फिर जानवरों का बाजार सजता है। हम भी उन्हीं गलियों से गुजर रहे थे, जहाँ रंग-बिरंगे पक्षी चहक रहे थे। पक्षियों की एक दुकान पर हमारी नजर एक बेहद खूबसूरत तोते पर ठहरी। उसे देखकर मैंने उत्साह में अपने पति से कहा, "जरा इस तोते के साथ मेरी एक फोटो तो खींच दीजिए!" मेरे पति ने फोटो खींचकर आदतन मेरे फोन को अपने पैकेट में डाल दिया।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे, दुकानों की सजावट और लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। अचानक, भीड़ के बीच मेरे पति को उनके कुछ पुराने दोस्त मिल गए। शिष्टाचार और थोड़ी झिझक के कारण उन्होंने मुझसे कहा, "तुम थोड़ा अलग होकर आगे बढ़ो, मैं बस पीछे-पीछे आता हूँ। मेरे दोस्त तुम्हें देखेंगे तो शायद असहज महसूस करें या परेशान करेंगे।"

मैंने भी सहज भाव से सिर हिलाया और आगे बढ़ गई। लेकिन मेले का समंदर ऐसा था कि देखते ही देखते हम दोनों एक-दूसरे से पूरी तरह बिछड़ गए।

अजीब बात यह थी कि बिछड़ने के बाद भी मैं बिल्कुल शांत थी। मुझे पता था कि दोनों मोबाइल फोन मेरे पति के पास ही रह गए हैं, लेकिन मुझे उनके नंबर याद थे। मैंने सोचा कि मंदिर तक पहुँचकर किसी अजनबी से फोन माँगूँगी और उन्हें अपनी लोकेशन बता दूँगी।

परंतु, दूसरी ओर मेरे पति की स्थिति इसके उलट थी। जैसा कि उन्होंने बाद में बताया, वे बदहवासी के आलम में पागलों की तरह मुझे भीड़ में खोज रहे थे। वे इस बात से डरे हुए थे कि दोनों फोन उनके पास हैं, तो मैं उनसे संपर्क कैसे करूँगी? वे खुद को कोस रहे थे कि आखिर उन्होंने मुझे अकेले आगे जाने ही क्यों दिया।

जब काफी देर बाद हम दोबारा मिले, तो उनकी हालत देखने लायक थी। बिखरे हुए बाल, पसीने से तर-बतर चेहरा और आँखों में एक ऐसी घबराहट जैसे कि वे रो ही देंगे। उस डर और सुकून के मिलन के बाद, हम काफी देर तक एक बेंच पर खामोश बैठे रहे। फिर हमने मंदिर में जाकर पूजा की।

पूजा के बाद हम पूरा मेला घूमे, लेकिन इस बार एक बदलाव था—उन्होंने एक पल के लिए भी मेरा हाथ नहीं छोड़ा। मैंने मजाक में उन्हें लाख समझाया कि "मैं इतनी जल्दी आपका साथ छोड़ने वाली नहीं हूँ," लेकिन उस दिन के डर ने उनके हाथों की पकड़ को और भी मजबूत कर दिया था।

विविध

विविध -1

डिजिटल चौखट पर बिहार

संतोष कुमार शर्मा
वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षक
(जीव विज्ञान),
बिहार शिक्षा विभाग

प्रस्तावना

बिहार की शिक्षा व्यवस्था अक्सर चुनौतियों और संसाधनों की कमी के विमर्श के बीच खड़ी दिखती है। लेकिन वर्ष 2026 के इस दौर में, राज्य के सरकारी स्कूलों की चहारदीवारी के भीतर एक शांत मगर गहरी क्रांति आकार ले रही है। यह क्रांति केवल स्मार्ट क्लास या टैबलेट वितरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) और 'मानवीय संवेदना' के उस अनूठे मेल की कहानी है, जो बिहार के अंतिम पायदान पर खड़े छात्र की किस्मत बदलने का सामर्थ्य रखती है।

1)शिक्षक: सूचना के स्रोत से 'प्रेरक' तक का सफर :AI के इस दौर में सबसे बड़ा डर यह था कि क्या मशीनें शिक्षकों की जगह ले लेंगी? बिहार के संदर्भ में इसका उत्तर 'नहीं' है।

यहाँ AI शिक्षकों को प्रतिस्थापित नहीं, बल्कि उन्हें 'सशक्त' कर रहा है। एक सरकारी शिक्षक का काफी समय प्रशासनिक कार्यों और डेटा प्रविष्टि जैसे कार्यों(जैसे ई-शिक्षाकोष पोर्टल) में जाता था। अब AI आधारित ऑटोमेशन इन कार्यों को सरल बना रहा है जिससे शिक्षक अपना पूरा समय बच्चों के साथ संवाद और उनके 'लर्निंग गैप्स' को समझने में बिता पा रहे हैं।

संसाधन प्रदाता:

जहाँ प्रयोगशालाओं की कमी है, वहाँ AI और VR (VIRTUAL REALITY) के माध्यम से शिक्षक बच्चों को मानव शरीर की संरचना या सौरमंडल की सैर करा रहे हैं। एक ग्रामीण शिक्षक अब केवल ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक ज्ञान का सूत्रधार बन गया है।

2) वैयक्तिकरण: हर बच्चे की अपनी रफ्तार : बिहार के सरकारी स्कूलों की सबसे बड़ी चुनौती रही है—एक ही कक्षा में अलग-अलग सीखने की क्षमता वाले बच्चे।

3)अडैप्टिव लर्निंग: AI आधारित सॉफ़्टवेयर अब यह पहचान लेते हैं कि छठी कक्षा के 'आर्यन' को गणित के किस विशेष सूत्र में दिक्कत आ रही है। यह तकनीक शिक्षक को एक 'डायग्नोस्टिक रिपोर्ट' देती है, जिससे शिक्षक को पता चलता है कि उसे किस बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देने की ज़रूरत है।

4)भाषा की बाधा का अंत: 'भाषिणी' जैसे AI टूल्स की मदद से अब जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं का स्थानीय बोलियों या सरल हिंदी में अनुवाद संभव हो पाया है जिससे भाषा अब ज्ञान के मार्ग में रोड़ा नहीं रही।

शिक्षक और AI के साथ गढ़ता एक नया भविष्य

1) **नीतिगत पहल और धरातल की सच्चाई** :भारत सरकार की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के विज़न को आगे बढ़ाते हुए बिहार ने डिजिटल बुनियादी ढाँचे में निवेश बढ़ाया है।

2) ICT लैब और स्मार्ट क्लास: राज्य के अधिकांश माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में ICT लैब की स्थापना की जा चुकी है।

शिक्षक प्रशिक्षण:

सक्षमता और निष्ठा (NISHTHA) जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाया जा रहा है। अब शिक्षक केवल 'उपयोगकर्ता' नहीं, बल्कि 'डिजिटल कंटेंट क्रिएटर' भी बन रहे हैं।

PM-SHRI योजना:

बिहार के चयनित PM-SHRI स्कूलों में AI को एक कौशल विषय (Skill Subject) के रूप में शामिल किया गया है, जो छात्रों को कोडिंग और डेटा विश्लेषण की बुनियादी समझ दे रहा है।

3) नैतिक सरोकार और 'ह्यूमन टच' :एक राष्ट्रीय पत्रिका के पाठक के नाते हमें यह समझना होगा कि AI कभी भी उस 'जादुई स्पर्श' की जगह नहीं ले सकता, जो एक शिक्षक की शाबाशी में होता है।

सहानुभूति का महत्व:

मशीन उत्तर दे सकती है, लेकिन वह छात्र की पारिवारिक पृष्ठभूमि या उसकी मानसिक स्थिति को नहीं समझ सकती। बिहार में जहाँ शिक्षा सामाजिक बदलाव का सबसे बड़ा हथियार है, वहाँ शिक्षक ही वह पुल है जो तकनीक को संवेदना के साथ जोड़ता है।

चुनौती:

बिजली की निर्बाध आपूर्ति और ग्रामीण क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट अभी भी एक संघर्ष है, जिसे मिशन मोड में दूर करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

बिहार के सरकारी स्कूलों में AI का समावेश केवल 'गैजेट्स' का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह 'समानता' की ओर बढ़ाया गया एक कदम है। यह सुनिश्चित करने का प्रयास है कि पटना के किसी बड़े निजी स्कूल के बच्चे और बाँका या पूर्णिया के सुदूर गाँव के बच्चे के पास सीखने के समान अवसर हों। शिक्षक यहाँ 'सारथी' हैं और AI उनका 'रथ', जो बिहार को ज्ञान की उस पुरानी गरिमा की ओर ले जा रहा है जहाँ नालंदा और विक्रमशिला जैसे नाम गूंजते थे।

विविध -2

जल संकट : समस्या एवं निदान

आशीष अम्बर
उ. म. वि. धनुषी , केवटी
दरभंगा

पानी की कमी सतत् विकास के लिए प्रमुख चुनौतियों में से एक है, क्योंकि पानी न केवल मानवता के लिए, बल्कि कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है और हमारे पारिस्थितिक तंत्र की जीवनधारा है। फिर भी,जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण हमारे मीठे पानी के संसाधन चिंताजनक दर से कम हो रहे हैं। घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर मीठे एवं पीने योग्य जल की माँग और पूर्ति में निरन्तर बढ़ता अंतराल मानव,जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों के जीवित रहने तथा विकसित होने के समक्ष संकट उत्पन्न कर रहा है। कृषि और औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने के लिए भूमिगत जलस्रोतों के अंधाधुंध दोहन ने जलस्तर को इस सीमा तक नीचे धकेल दिया है कि अनेक क्षेत्रों में इसकी निकासी भी संभव नहीं है। नदियों , प्राकृतिक झरनों और जलाशयों में लगातार गिरते अनुपचारित दूषित जल जो कई क्षेत्रों के नालों तथा औद्योगिक इकाइयों से आता है - ने इन जल-स्रोतों के पानी को छूने लायक भी नहीं छोड़ा है , पीने की बात तो बहुत दूर है। असामयिक और अनियमित वर्षा से प्रति वर्ष नदियों में आने वाली विनाशकारी बाढ़ों का पानी बह कर समुद्रों में चला जाता है।

आर्थिक शब्दावली में पानी सर्वोपकारी वस्तु (मेरिट गुड) है , इसलिए यह' मुफ्तखोरी' की समस्या से ग्रसित है।

जल की बढ़ती माँग और बढ़ता जल प्रदूषण :- बढ़ते शहरीकरण से पानी की माँग बढ़ रही है और अधिक अपशिष्ट जल उत्पन्न हो रहा है। कृषि, उद्योग और घरों जैसे विभिन्न क्षेत्रों को दुर्लभ जल संसाधनों के लिए मजबूत प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा।

जलापूर्ति :-वर्तमान में 844 मिलियन लोगों के आबादी के 9 में से एक को अपने घरों से आधे घंटे के भीतर स्वच्छ , किफायती पानी तक पहुँच नहीं रही है और हर वर्ष 5

वर्ष से कम उम्र के लगभग 3,00,000 बच्चे गंदे पानी और खराब स्वच्छता से जुड़े दस्त से मर जाते हैं। जरूरतमंदों को पानी उपलब्ध कराना मानव सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

जल की कमी को दूर करने के उपाय

1. जल निस्पंदन प्रणाली का विकास करना।
2. जल प्रबंधन को बढ़ावा देना।
3. आर्द्र भूमियों की रक्षा करना।
4. जलाशयों में जल भंडारण बढ़ाना।
5. वर्षा जल को संरक्षित करना

निष्कर्ष :-

हमारी आनेवाली पीढ़ी को जल संकट की समस्या से दो - चार होना पड़ सकता है। इसलिए हमें यह निश्चय करना होगा कि जल संसाधन का संरक्षण किया जाए।

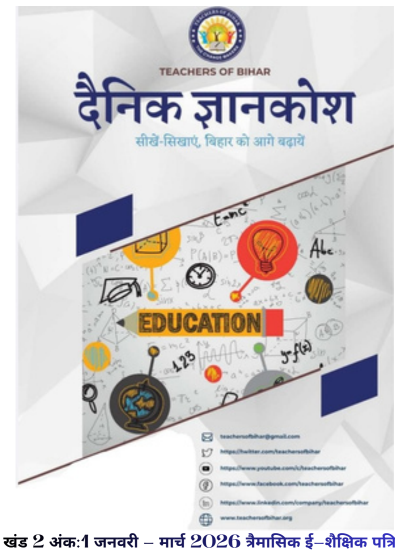

अधिक जानकारी के लिए
दिए गए QR कोड कोन
स्कैन करें

विविध -3

पटना का गोल-घर : एक ऐतिहासिक स्मारक

हर्ष नारायण दास
म०विद्यालय घीवहा
फारबिसगंज, अररिया

पटना विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक है।अपनी ऐतिहासिक गाथा के क्रम में इस नगर के नाम कई बार परिवर्तित हुए। कुसुमपुर, पुष्पपुर, अजीमाबाद, पाटलिपुत्र, पाटलिग्राम इत्यादि नामों से प्रसिद्ध यह नगर प्राचीन काल से ही विश्व के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। पटनदेवी, शहीद स्मारक, सदाकत आश्रम, खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना सिटी का गुरुद्वारा इत्यादि यहाँ के प्रमुख सांस्कृतिक धरोहर, धार्मिक-स्थल और ऐतिहासिक इमारत आज भी लोगों के आकर्षण के केन्द्र हैं।पटना के इन्हीं प्रमुख आकर्षणों में गोलघर का अपना विशिष्ट स्थान है।

जिस तरह आगरे की पहचान 'ताजमहल' दिल्ली की पहचान'कुतुबमीनार' हैदराबाद की पहचान 'चारमीनार' और कोलकाता की पहचान 'विक्टोरिया मेमोरियल' से है, ठीक उसी प्रकार पटना की पहचान 'गोलघर' से है।

गोलघर 234 वर्ष पुराना बिहार का एक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक है। यह बिहार की राजधानी पटना के बाँकीपुर मुहल्ले में गंगा से लगभग 100 मीटर दक्षिण में स्थित है।

गोलघर का शाब्दिक अर्थ 'गोल आकार का घर' है।यह भारतीय स्थापत्य-कला का एक अनूठा नमूना है। इस गुम्बदाकार इमारत पर दो अभिलेख अंकित है-एक हिन्दी में और दूसरा उसका अनुवाद अँग्रेजी में। इन अभिलेखों के अनुसार गोलघर के निर्माण का निर्णय सन् 1770 के प्रसिद्ध दुर्भिक्ष 'द ग्रेट बंगाल फेमिन' के बाद तत्कालीन गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग के आदेशानुसार लिया गया था। इस गोलघर का निर्माण 20 जनवरी 1784 के गवर्नर वारेन हेस्टिंग के शासन काल में शुरू हुआ था और 20 जुलाई 1786 को नये गवर्नर जेनरल सर जॉन मैकफर्सन के शासन काल में पूरा हुआ।इस अद्भुत भवन का निर्माण अन्न संग्रह करने के निमित्त किया गया था,जिससे कि दुर्भिक्ष जैसी संकट की घड़ी में इसमें संग्रहित अन्न का उपयोग किया जा सके,लेकिन जिस उद्देश्य से इसे बनाया गया था, उस कार्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया गया।

बहुत बाद में इसका उपयोग सरकारी अन्नागार के रूप में किया जाने लगा और आज भी उसी रूप में किया जाता है। आज यह बिहार में सबसे बड़ा अन्न का गोदाम है। हालाँकि गोलघर को बिहार राज्य के दर्शनीय स्थल, ऐतिहासिक स्मारक और कला निधि अधिनियम 1676 के अधीन एक राजकीय महत्त्व का ऐतिहासिक स्मारक घोषित कर दिया गया है फिर भी इस का उपयोग भारतीय खाद्य निगम के गोदाम के रूप में किया जा रहा है।

यह विशाल गुम्बदाकार इमारत ईंट से निर्मित है, जो पृथ्वी की सतह से 2 फीट ऊँचे आधार पर बनी प्रतीत होती है। गोलघर की गुम्बदाकार दीवार के बाहर चारों तरफ आधार से इसके चबूतरे की चौड़ाई 4 फीट 9 इंच है।चबूतरे से गोलघर की ऊँचाई 96 फीट है।प्लिंथ के पास गोलघर के भीतरी और बाहरी व्यास की लंबाई क्रमश:109 फीट और 121 फीट 4 इंच है।इस तरह आधार के पास इसके दीवार की मोटाई 12 फीट 4 इंच है।

पटना का गोल-घर : एक ऐतिहासिक स्मारक

इसमें दो मेहराबदार दरवाजे हैं-एक उत्तर की ओर दूसरा दक्षिण की ओर।प्रत्येक दरवाजे की चौड़ाई और ऊँचाई क्रमशः 5 फीट 1.5 इंच और 7 फीट 6 इंच है। प्रारम्भ में ये दरवाजे भीतर की ओर खुलते थे जो बाद में सुधार कर बाहर की ओर खुलने वाले बना दिये गए।अब इन्हीं दरवाजों से इसमें अनाज रखा और निकाला जाता है। गुम्बदाकार गोलघर के गुम्बद की चोटी तक पहुँचने के लिए दोनों ओर से एक वलयाकार 145 सीढियाँ हैं जिनके माध्यम से नीचे से ऊपर दीवार से गोलघर पर चढ़ा जाता है। गोलघर की दीवार के बीच दीवार के बाहर सतह पर ढाई इंच व्यास वाली लोहे की एक खोखली पाइप लगी है जो दीवार से जगह-जगह स्थिर रूप से जुड़ी हुई है।इसी लोहे की खोखली पाइप को पकड़ कर लोग गोलघर की चोटी पर चढ़ते-उतरते हैं। दोनों ओर की रेलिंग की दीवार के बाहर की ओर 16-16 की संख्या में आयताकार पट्टियाँ लगी हैं।प्रत्येक आयताकार पट्टी के समान आकार के दो वर्गाकार छिद्र बने हुए हैं। पहले इन छिद्रों में गमले रखे जाते थे, परन्तु अब तो यहाँ ऐसा कुछ भी देखने को नहीं मिलता है।

इसके शिखर के मध्य में 2 फीट 7 इंच व्यास का एक गोलाकार छिद्र बना हुआ था, जिससे उसके अंदर अनाज डाला जाता था।उस समय वह छिद्र 'गारस्टियन पोली' के नाम से प्रचलित हो गया था किन्तु बाद में उसे पत्थर की पट्टिका से बन्द कर दिया गया और उस पर एक बुर्ज बना दिया गया जिससे कि नवाब, श्रीमन्त, सत्ताधीश और विदेशों से आने वाले सैलानी उस पर चढ़कर आह्लादित हों तथा अंग्रेज़ों द्वारा तैयार किये गए ढाँचे के आधार पर उन्हीं की देख-रेख में बने स्थापत्य-कला की इस अनूठे नमूने को देखकर प्रशंसा किये बिना न रह सकें। लेकिन सन् 1934 में बिहार में आये प्रलयंकारी भूकम्प में वह बुर्ज टूट गया जो बाद में फिर नहीं बना। गोलघर की विशेषता है कि इसके गुम्बदाकार स्वरूप की गोलाई लगभग भूतल से ही शुरू हो जाती है। इसके भीतर एक भी स्तम्भ(खम्भा)नहीं है।इस ऐतिहासिक स्मारक में रोम और एथेन्स की भव्य इमारतों की शैली परिलक्षित होती है।

इसकी एक और विशेषता है इस की बेमिसाल मजबूती। सन् 1934 में आया प्रलयंकारी भूकम्प में भी गोलघर अचल रहा, जबकि सैकड़ों बड़ी-बड़ी इमारतें ध्वस्त हो गईं। जिस समय गोलघर का निर्माण शुरू हुआ था, उस समय रेलगाड़ी और मोटर का आवागमन नहीं हुआ था। इसलिये मालवाहन हेतु मुख्य मार्ग नदी ही थी।

इतिहासकारों के अनुसार गोलघर निर्माताओं की योजना थी कि इस तरह के और भी भवन बंगाल के अनाज उपजाये जानेवाले क्षेत्रों में बनवाये जाएँ, लेकिन एक तकनीकी भूल के कारण दूसरे गोलघर के निर्माण की योजना धरी-की-धरी रह गई। भूल यह थी कि गोलघर के दोनों दरवाजे भीतर की ओर खुलने वाले थे।अंततः लाचार होकर दरवाजे को तोड़ना पड़ा। दरवाजे के टूटते-ही गोलघर के अन्दर रखे अनाज इतने वेग से बाहर निकले कि कई लोग धराशायी हो गए।इसी भूल के कारण निर्माण से लेकर सन् 1956 तक गोलघर यूँ ही पड़ा रहा। यह भूल अंग्रेज इंजीनियर कैप्टन पवन जॉन गारस्टियन ने की थी,जिसे गारस्टियन की भूल कहा जाता है। सन् 1956 में इन दरवाजे को बाहर से खुलने वाला बना दिया गया।तब से लेकर आजतक यह सरकारी अन्नागार के रूप में उपयोग में लाया जाता रहा है।

आम जनता का पुनीत कर्त्तव्य है कि गोलघर की दीवार पर चाकू या किसी अन्य तेज एवं नुकीले औजार की मदद से अपना नाम खोदकर इस अद्भुत ऐतिहासिक स्मारक को किसी तरह की क्षति न पहुँचावे।

विविध -4

मैं शिक्षक कब बना ?

राकेश कुमार
शारीरिक शिक्षक
मध्य विद्यालय बलुआ
मनेर (पटना)

बात तो बहुत पुरानी है। माह दिसम्बर वर्ष 2006 जब मुझे शिक्षक नियुक्ति-पत्र मिला और मैं शिक्षक के पद पर आसीन हुआ। मेरी नियुक्ति 'शारीरिक शिक्षक' के पद पर हुई। शिक्षक बनने के पूर्व मैं एक निजी कंपनी में कार्यरत था। जब मैं शिक्षक बना, विद्यालय में योगदान किया तो हमारे प्रधान शिक्षक ने पूछा कि आप 'शारीरिक' के अलावा और कौन-सा विषय बच्चों को पढ़ा सकते हैं ? मैं कुछ देर शांत रहा क्योंकि इसके पूर्व शिक्षण का कोई अनुभव मुझे नहीं था। मुझे कोई निर्णय लेना था तो मैंने बोला- “सर अंग्रेज़ी पढ़ा दूँगा।"

मैंने ये विषय इसलिए चुना कि जब मैं “निजी कंपनी” में कार्यरत था तो “अंग्रेजी” में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता था क्योंकि मेरी शैक्षिक पृष्ठभूमि सरकारी विद्यालय ही था। मेरा मानना था कि सरकारी विद्यालय के बच्चे 'अंग्रेजी' में कमजोर होते हैं।

मुझे याद है-एक शिक्षक के रूप में मैंने अपनी पहली कक्षा वर्ग VII से शुरु की थी। वर्ग में जाते ही पूछा कि अंग्रेजी का किताब पढ़ने किसको-किसको आता है? मुझे आश्चर्य हुआ कि एकाध बच्चे ने ही हाथ उठाया। जिस बच्चे ने हाथ उठाया उसकी पढ़ने की क्षमता भी न के बराबर थी। इस संदर्भ के बाद मैंने कई स्तर से प्रयास किया कि कम-से-कम बच्चों को अंग्रेजी की किताब पढ़ना आ जाए लेकिन प्रयास नाकाफी साबित हो रहे थे। मैं इस संदर्भ में अपने वरीय लोगों से चर्चा करता तो परामर्श नकारात्मक ही होता था। उनके द्वारा बताए गए उपाय शायद शिक्षा के मानक के अनुरूप नहीं थे।

समय बीतता गया। मैं भी आत्मसंतुष्टि के बिना कार्य करना सीख रहा था कि अचानक परिवर्तन हुआ। वर्ष 2018 में एक समाचार पत्र पढ़ रहा था कि मेरी नजर एक खबर पर आकर रुक गई। वो खबर थी “टीचर्स ऑफ बिहार” की संकल्पना की । उसमें जुड़ने के तरीके का भी जिक्र था, लेकिन उस समय मैं सोशल मीडिया पर उतना सक्रिय नहीं था। मेरे शैक्षिक जीवन में “टीचर्स ऑफ बिहार” ने यहीं से परिवर्तन लाना शुरू किया। मैं सोशल मीडिया के उपयोग हेतु सक्रिय हो गया और फेसबुक ग्रुप से जुड़ गया और इसपर होने वाली गतिविधियों को देखने लगा। यकीन मानिए मेरे लिए ये सब गतिविधियाँ एक सुखद अनुभव थीं, जिससे मैं अभी तक अनजान था।

अब मेरी कोशिश *टीचर्स ऑफ बिहार* के “फाउंडर” से जुड़ने की थी। इस संदर्भ में मैंने सोशल मीडिया की सहायता से उनसे संपर्क किया और उन्होंने मुझे मेरी रूचि के अनुसार एक विषयवस्तु पर एक आलेख लिखने को कहा। वो दिन था-15 दिसंबर 2019। मैंने वो आलेख लिखकर भेज दिया और विद्यालय चला गया। वो मेरा शैक्षिक कार्यकाल का प्रथम आलेख था। मैं पूरे दिन उस आलेख के बारे में ही सोचता रहा कि “फाउंडर महोदय” को वो आलेख पसंद आएगा या नहीं। शाम को मैं जब घर आया तो मन में नियंत्रित इच्छा अनियंत्रित हो गई। मैंने अपना मोबाइल निकाला और “फाउंडर महोदय” का संदेश देखा जिसमें लिखा हुआ था “welcome to team”। मुझे अपार खुशी की अनुभूति हुई कि मैं “टीचर्स ऑफ बिहार द चेंज मेकर्स” का हिस्सा हूँ। मुझे ऐसा लगा कि मैं आज एक शिक्षक बन गया! इसके बाद मैं प्रत्येक दिन बच्चों के बीच 'टीचर्स ऑफ बिहार' पर डाली गई गतिविधियों एवं “दिवस ज्ञान” की चर्चा करता और बच्चों को स्वयं आगे आने को प्रोत्साहित करता। मेरी यह सोच थी कि बच्चों को अधिक-से-अधिक क्रियाशील बनाना है। बहुत जल्द मुझे सुखद परिणाम मिलने लगे जिससे प्रोत्साहित होकर मैं भी प्रतिदिन कोई-न-कोई गतिविधि करता एवं करवाता।

मैं शिक्षक कब बना?

यहाँ पर मैं एक बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि मुझे “टीचर्स ऑफ बिहार” के किसी भी सदस्य से प्रत्यक्षतः मिलने का मौका 'टीचर्स ऑफ बिहार' से जुड़ने के छः साल बाद वर्ष 2025 में राज्यस्तरीय शिक्षक समारोह में मिला लेकिन फिर भी हमेशा ऐसा महसूस होता था कि हम एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ये 'टीचर्स ऑफ बिहार' का सबसे बड़ा गुण है।

धन्यवाद “टीचर्स ऑफ बिहार” का जिसने मुझे शिक्षक बनने में मेरी मदद की। जिसने मेरी शिक्षण विधि को आसान किया। मैंने स्वयं की अभिव्यक्ति को “मैं शिक्षक कब बना” ? नाम इसलिए दिया क्योंकि मेरा मानना है कि आपने पद कब धारण किया है वो महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि आप अपने कार्यों को आत्मसंतुष्टि के साथ आनंद उठाना कब शुरु किया है, वह महत्त्वपूर्ण है। समस्त "टीचर्स ऑफ बिहार" को फाउंडेशन डे की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

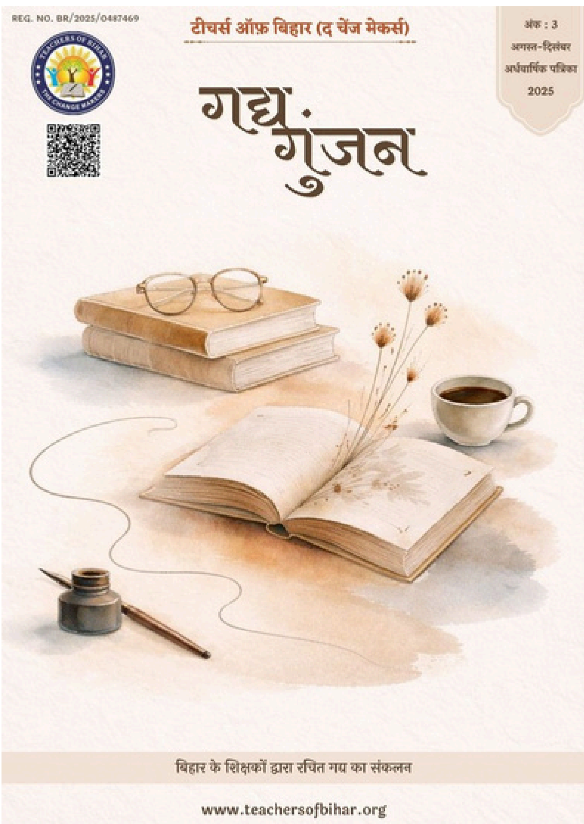

ऐसे ही और गद्य को पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड को न स्कैन करें

सुर्खियाँ

सुर्खियाँ

टीचर्स ऑफ बिहार-द चेंज मेकर्स बिहार के शिक्षकों और छात्रों के लिए एक अभिनव और सशक्त मंच

गोपाल विद्यार्थी

पटना : बिहार के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और बच्चों के सीखने के स्तर को ऊँचा उठाने के उद्देश्य से टीचर्स ऑफ बिहारद्धद चेंज मेकर्स मंच द्वारा की जा रही पहल लगातार चर्चा में है। यह मंच आज बिहार के हजारों शिक्षकों, लाखों छात्रों और शिक्षा प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। डिजिटल युग में शिक्षकों को एक ही मंच पर जोड़कर बिहार की शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाने का यह प्रयास अब एक जन-आंदोलन का रूप ले रहा है।मंच के संस्थापक शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बताया कि टीचर्स ऑफ बिहार की स्थापना इस सोच के साथ की गई थी कि बिहार के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षकों को एक ऐसा प्लेटफॉर्म मिले जहाँ वे अपने अनुभव, नवाचार और तकनीकी समझ को साझा कर सकें। आज यह मंच केवल विचारों का नहीं, बल्कि सकारात्मक बदलावों का बड़ा केंद्र बन गया है। दोनों ने कहा कि डिजिटल युग में शिक्षा केवल कक्षा की चार दीवारों तक सीमित नहीं रह गई। ऐसे में यह मंच शिक्षकों को वीडियो आधारित लर्निंग, ऑनलाइन सामग्री, शिक्षण तकनीक, ई-लर्निंग संसाधन, डिजिटल टूल और टेक आधारित गतिविधियों से जोड़ने का कार्य कर रहा है। इससे कक्षा-कक्ष में पढ़ाई अधिक प्रभावी, रोचक और आधुनिक बन रही है। उन्होंने यह भी बताया कि मंच की गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों में सीखने के प्रति रुचि जगाना, शिक्षकों में नवाचार की भावना बढ़ाना और स्कूलों को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना है। हमारा विजन है-बिहार के हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और आधुनिक शिक्षा पहुँचे। प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार मात्र एक संगठन नहीं, बल्कि हजारों शिक्षकों की समर्पित सोच, प्रतिबद्धता और रचनात्मकता का प्रतीक है। इस मंच ने शिक्षकों को एक नई पहचान, नई ऊर्जा और नई दिशा दी है। उन्होंने बताया कि मंच द्वारा समय-समय पर चलाए गए शैक्षणिक अभियानों का असर आज बिहार के हजारों विद्यालयों में देखने को मिल रहा है। मंच के मास्टरक्लास प्रोग्राम, नवाचारी शिक्षण वीडियो, स्टोरीटेलिंग प्रोजेक्ट, मोटिवेशनल कैम्पेन और डिजिटल लर्निंग पहलों ने छात्रों के सीखने के स्तर को काफी ऊँचा उठाया है। रंजेश कुमार और मृत्युंजय कुमार ने कहा कि मंच द्वारा शिक्षकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वेबिनार, कार्यशालाओं और संवाद श्रृंखला ने जिले-दर-जिले एक सकारात्मक शैक्षणिक वातावरण तैयार किया है। हमारी कोशिश है कि बिहार के किसी भी शिक्षक या विद्यालय को नवाचारी संसाधनों की कमी महसूस न हो और हर बच्चा अपने सपनों की उड़ान भर सके।

मंच के इवेंट लीडर केशव कुमार ने बताया कि टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम, इनोवेटिव टीचिंग कैंप, स्टूडेंट क्रिएटिविटी फेस्ट, कार्यशालाएँ और विषय-आधारित प्रशिक्षण सत्र सीधे-सीधे बच्चों के सीखने और शिक्षकों की क्षमता को प्रभावित कर रहे हैं। टीचर्स ऑफ बिहार आज बिहार में शिक्षा जगत का सबसे विश्वसनीय, सक्रिय और नवोन्मेषी मंच बन चुका है। शिक्षकों की सोच, छात्रों की ऊर्जा और शिक्षा प्रेमियों के सहयोग से यह मंच आज एक ऐसी क्रांति का नेतृत्व कर रहा है जो आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को मजबूत करेगी।

दैनिक भास्कर | सहरसा-मधेपुरा / सुपौल भास्कर 08-02-2026

उपलब्धि • गुरुग्राम में विभिन्न राज्यों की टीमों के साथ खेले गए सात मुकाबले

रोबोटिक्स के नेशनल राउंड में पहुंचीं छात्राएं

भास्कर न्यूज | त्रिवेणीगंज (सुपौल)

प्लस टू ललित नारायण लक्ष्मी नारायण प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय की छात्राओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

हरियाणा के गुरुग्राम स्थित एसजीटी यूनिवर्सिटी में 5 से 8 फरवरी तक आयोजित स्मार्ट टेक चैलेंज अंतरराष्ट्रीय रोबोटिक्स प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम ने नेशनल राउंड के लिए क्वालीफाई कर लिया है। प्रतियोगिता के पहले दिन देश के विभिन्न राज्यों से आई टीमों के साथ कुल सात मुकाबले खेले गए। इस दौरान स्टीम वर्सिटी की टीम ने तकनीकी मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया। छात्राओं ने पहले ही दिन अपने रोबोट का निर्माण पूरा कर उसे सफलतापूर्वक मैदान में उतारा। दूसरे दिन अपने पिट एरिया को आकर्षक तरीके से सजाया। नेशनल स्तर पर चयन के लिए इंटरव्यू हुआ। टीमवर्क के दम पर नेशनल राउंड में जगह पक्की की।

मुकाबले के दौरान रोबोट के साथ त्रिवेणीगंज की छात्राएं।

भास्कर इनसाइट

केवल 3.5 लाख में तैयार किया रोबोट

छात्राओं ने मात्र 3.5 लाख रुपये की लागत से तैयार रोबोट के साथ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। जबकि कई अन्य टीमें 50 लाख से 80 लाख रुपये तक के महंगे रोबोट लेकर मैदान में उतरी थीं।

धीरूभाई अंबानी स्कूल की टीम के साथ भी मुकाबला

टीम के मार्गदर्शक इंजीनियर विकास ने बताया कि शनिवार को प्रतियोगिता के तहत कुल पांच मुकाबले हुए। एक मुकाबला धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल की टीम के साथ भी हुआ। आरआरआर फाउंडेशन के संस्थापक विकास तकनीकी रूप से टीम का मार्गदर्शन कर रहे हैं। टीम में कक्षा 10वीं की पुष्पा कुमारी एवं कक्षा 9वीं की प्रज्ञा कुमारी, शिवानी, सिमरन और नेहा कुमारी शामिल हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक सौरभ सुमन ने छात्राओं की उपलब्धि पर खुशी जताते हुए कहा कि लगातार अभ्यास, सहयोग और नवाचार की बदौलत टीम ने यह मुकाम हासिल किया है। यह उपलब्धि पूरे क्षेत्र के लिए गर्व की बात है।

Teachers Of Bihar–The Change Makers : शिक्षा परिवर्तन की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

परिवहन विशेष न्यूज

पटना/बिहार:- बदलते समय के साथ शिक्षा व्यवस्था मे नवाचार, तकनीक और शिक्षक सहयोग की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। ऐसे दौर मे Teachers Of Bihar–The Change Makers मंच देश की शिक्षा व्यवस्था मे एक सकारात्मक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप मे उभरकर सामने आया है। बिहार से शुरू हुई यह पहल आज देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी (PLC) के रूप मे अपनी सशक्त पहचान बना चुकी है।

शिक्षकों द्वारा शिक्षकों के लिए एक सशक्त मंच....

Teachers Of Bihar मंच का मूल उद्देश्य शिक्षकों को एक-दूसरे से जोड़कर सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning) को बढ़ावा देना है। यहाँ शिक्षक अपने अनुभव, नवाचार, टीएलएम, गतिविधि आधारित शिक्षण पद्धतियाँ और कक्षा मे किए गए सफल प्रयोग साझा करते हैं। यह मंच केवल चर्चा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सीधा प्रभाव कक्षा शिक्षण और छात्र अधिगम पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

एससीईआरटी द्वारा सराहना–राष्ट्रीय पहचान.....

Teachers Of Bihar मंच द्वारा किए जा रहे शैक्षिक प्रयासों को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा सराहा जाना इस बात का प्रमाण है कि यह पहल अब राज्य स्तर से निकलकर राष्ट्रीय मंच पर अपनी उपयोगिता और प्रभाव सिद्ध कर चुकी है। यह उपलब्धि बिहार के शिक्षक समुदाय के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

ई-पत्रिकाओं के माध्यम से ज्ञान का विस्तार....

मंच द्वारा शिक्षको एवं छात्रों के लिए नियमित रूप से कई शैक्षिक ई-पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं।

दैनिक ज्ञानकोश के माध्यम से समसामयिक एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी,

प्रज्ञानिका के जरिए शैक्षिक नवाचार, साहित्य, शोध एवं शिक्षण रणनीतियाँ,

तथा बालमंच एवं बालमन के द्वारा बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, लेखन और प्रतिभा को मंच प्रदान किया जाता है। वहीं अन्य पत्रिकाओं मे पद्यपंकज एवं गद्यगुंजन भी शिक्षकों एवं छात्रों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रहा है।

इन ई-पत्रिकाओं ने डिजिटल माध्यम से शिक्षा को अधिक सुलभ, रोचक और प्रभावी बनाया है।

मजबूत नेतृत्व और स्पष्ट दृष्टि......

Teachers Of Bihar के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन के नेतृत्व मे मंच निरंतर नई ऊँचाइयों को छू रहा है। उनका मानना है कि शिक्षक ही शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ हैं और जब शिक्षक सशक्त होंगे, तभी छात्र और समाज सशक्त होगा।

शिक्षा आंदोलन का रूप लेता मंच....

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार के अनुसार, Teachers Of Bihar आज केवल एक डिजिटल प्लेटफॉर्म नहीं, बल्कि शिक्षा सुधार का एक सशक्त आंदोलन बन चुका है। मंच से जुड़े हजारों शिक्षक अपने नवाचारों के माध्यम से सरकारी विद्यालयों की शैक्षिक गुणवत्ता मे सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं।

कार्यक्रम, प्रशिक्षण और नवाचार....

मंच के इवेंट लीडर केशव कुमार बताते हैं कि Teachers Of Bihar द्वारा समय-समय पर वेबिनार, ऑनलाइन शिक्षक संवाद, नवाचार प्रदर्शन एवं कार्यशालाएं आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों से शिक्षकों को नई शिक्षण तकनीकों, डिजिटल टूल्स और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों की जानकारी मिलती है।

भविष्य की दिशा....

Teachers Of Bihar–The Change Makers का लक्ष्य आने वाले समय में और अधिक शिक्षकों को जोड़ते हुए शिक्षा को समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और बाल-केंद्रित बनाना है। यह मंच यह सिद्ध कर रहा है कि जब शिक्षक संगठित होकर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते हैं, तो शिक्षा व्यवस्था मे वास्तविक परिवर्तन संभव है।

Teachers Of Bihar केवल एक नाम नहीं,

यह शिक्षा परिवर्तन की पहचान है।

स्कूलों में बदलाव की कहानी एकत्र करेगा एससीईआरटी

- एससीईआरटी ने शिक्षकों से मांगी इंपैक्ट स्टोरी
- परियोजना आधारित शिक्षा की कहानी होगी संकलित

पटना, कार्यालय संवाददाता। उच्च प्राथमिक (छठी से आठवीं) विद्यालयों में परियोजना आधारित शिक्षण (पीबीएल) से हुए बदलाव की कहानी को राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) प्रकाशित करेगा। एससीईआरटी ने राज्य के सभी विद्यालयों जहां छठी से आठवीं की पढ़ाई होती हैं, वहां के शिक्षकों से विद्यालय में पीबीएल की सफलता की कहानियां साझा करने को कहा है।यह कहानियां परिषद दस्तावेज की रूप में संकलित करेगा और इसे प्रकाशित करेगा, ताकि अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा बन सके।

परिषद ने इस संबंध में सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी को पत्र लिखा है। इसके तहत स्कूलों में गणित और विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों से 2025-26 उनके द्वारा प्रयोगात्मक ढंग से ली गई कक्षाओं से बच्चों की सीखने की प्रगति या कोई बड़ी उपलब्धि हासिल हुई हो, तो उसकी पूरी यात्रा को लिखकर भेजनी होगी। इसमें शिक्षक चुनौतियों, अपने स्तर से किए प्रयासों, सामूहिक प्रयास की कहानी को भी शामिल करेंगे। परिषद ने सभी जिले से जिला स्तर पर पांच बेहतरीन पीबीएल सफलता की कहानियां मांगी है।

राज्य स्तर पर सफलता की एक सर्वश्रेष्ठ कहानी को एससीईआरटी प्रकाशित करेगा। इससे अन्य शिक्षकों को प्रोत्साहित करना है। राज्य के 40 हजार विद्यालयों में छठी से आठवीं तक परियोजना आधारित शिक्षण होता है।

नेतृत्व करने वालों के प्रयासों का भी होगा दस्तावेजीकरण : परिषद ने कहा है कि जिला स्तर पर इसका नेतृत्व करने वालों के प्रयासों का भी दस्तावेजीकरण किया जाएगा।

इसमें बीईओ, तकनीकी समूह के सदस्य, संकुल स्तर पर अकादमिक सहयोग, प्रखंड स्तर पर योजना एवं निगरानी, जिला स्तर पर समन्वय आदि को भी शामिल कर प्रकाशित किया जाएगा।

जिले के 50 विद्यालयों में खुलेगी बच्चों की लाइब्रेरी

पटना। प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को कम उम्र से ही किताब पढ़ने की आदत डालने को लेकर नई पहल की जा रही है। जिला शिक्षा कार्यालय, पटना के 50 प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के लिए लाइब्रेरी खोलेगा।इसके लिए स्कूलों के चयन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है।

इन पुस्तकालयों के लिए किताबें बच्चों की उम्र और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर चुनी जाएंगी। इनमें पारंपरिक किताबों की तरह घना पाठ (टेक्स्ट) नहीं होगा, बल्कि आकर्षक और रंगीन चित्रों के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों पर आधारित सामग्री होगी। कम टेक्स्ट और अधिक चित्र होने से छोटे बच्चे आसानी से किताबों से जुड़ सकेंगे। योजना के मुताबिक, प्रत्येक पुस्तकालय में 50 से अधिक विभिन्न प्रकार की किताबें उपलब्ध कराई जाएंगी। विज्ञान, गणित, पर्यावरण, कला, नैतिक शिक्षा और प्रेरक कहानियों जैसी विविध विषयों पर आधारित होंगी।

नए सत्र यानी अप्रैल तक सभी लाइब्रेरी को स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है, ताकि नए सत्र की शुरुआत के साथ ही बच्चे इस सुविधा का लाभ उठा सकें।

एआइ व लैंग्वेज लैब में पढ़ेंगे बच्चे

केंद्रीय मदद से राज्य के 31,297 विद्यालयों में स्थापित होंगे आधुनिक लैब

दीनानाथ साहनी • जागरण

पटना : बिहार के सरकारी विद्यालयों में एआइ लैब और लैंग्वेज लैब में बच्चे पढ़ाई करेंगे, ताकि ये बच्चे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) और तकनीकी शिक्षा में निजी विद्यालयों के बच्चों से नहीं पिछड़ें। इसके लिए सरकार सभी 31,297 मध्य विद्यालयों में एआइ आधारित लैब तथा लैंग्वेज लैब स्थापित करने जा रही है। इसमें केंद्रसरकार संसाधन उपलब्ध कराने हेतु राशि मुहैया कराएगी। नये वित्तीय वर्ष 2026-27 में स्कूली शिक्षा को तकनीक के साथ जोड़ेगी। एक-एक सरकारी विद्यालय हाईटेक बनेंगे।

शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने कहा है कि वैश्विक शिक्षा की चुनौतियों को देखते हुए विद्यालय स्तर पर इंटीग्रेटेड (एकीकृत) साइंस एंड टेक्नोलाजी के साथ-साथ नवाचार को बढ़ावा देना प्राथमिकता में है। 4621 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इंटीग्रेटेड साइंस लैब की स्थापना हो चुकी है। इस वर्ष 3991 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इंटीग्रेटेड साइंस लैब स्थापित करने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। केंद्र सरकार द्वारा अटल टिंकरिंग लैब और रोबोटिक्स की भी स्थापना की जा रही है।

नीतीश सरकार सभी सरकारी विद्यालयों में ऐसी शिक्षा व्यवस्था देना चाहती है कि 12वीं के बाद उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पाने से पहले हर छात्र विद्यालय में स्मार्ट क्लास, इंटीग्रेटेड साइंस लैब व एआई आधारित लैब से परिचित हो चुके हों। 5277 प्रारंभिक विद्यालयों में आइसीटी लैब और 6113 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में स्मार्ट क्लास स्थापित किया जा रहा है।

अटल इनोवेशन मिशन भी सरकारी विद्यालयों में लागू : केंद्र प्रायोजित अटल इनोवेशन मिशन (एआइएम) भी सरकारी विद्यालयों व उच्च शिक्षण संस्थानों में लागू किया जा रहा है। इससे विद्यालय स्तर पर शिक्षा में बदलाव के साथ-साथ युवा मस्तिष्कों में रचनात्मक प्रोत्साहन को सक्षम बनाएगा। युवाओं को नवाचार व उद्यमिता में प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र सरकार की यह प्रमुख पहल है।

अटल टिंकरिंग लैब से रचनात्मकता को मिलेगा बढ़ावा: केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण पहल में शामिल अटल टिंकरिंग लैब से विद्यालय स्तर पर बच्चों में रचनात्मकता और नवाचार की भावना को प्रोत्साहित करने में मदद मिलेगी। जल्द ही हर विश्वविद्यालय में अटल इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना की जाएगी, जो स्टार्ट-एप्स के फलने-फूलने के लिए इको सिस्टम तैयार करेगा। सेंटर में उद्यमियों द्वारा युवाओं को निःशुल्क मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। इंफ्रास्ट्रक्चर, मेंटरशिप, सीड फंडिंग एवं इंडस्ट्री नेटवर्क संबंधी जानकारी देने के साथ-साथ और कार्यस्थल पर भ्रमण भी कराया जाएगा।

कवायद

- उच्च शिक्षा से पहले हर बच्चे स्मार्ट क्लास व एआइ में होंगे दक्ष
- युवाओं को नवाचार व उद्यमिता के लिए किया जाएगा प्रोत्साहित

अटल टिंकरिंग लैब: इस लैब में रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, थ्री-डी प्रिंटिंग, इंटरनेट आफ थिंग्स जैसी तकनीकी की जानकारी दी जाएगी। इससे छात्र-छात्राओं में डिजाइन माइंडसेट, कंप्यूटेशनल थींकिंग, लर्निंग, फिजिकल कंप्यूटिंग जैसी स्किल्स डेवलप करने में मदद मिलेगी। लैब में प्रयोगात्मक शिक्षा की सुविधा होगी। माडर्न टेक्नोलाजी से लैस डिवाइस और रिसोर्सेस का इस्तेमाल करके इनोवेशन को विकसित करने का मौका मिलेगा। ये लैब आने वाले समय में सभी विद्यालयों में स्थापित की जाएगी।

सुर्खियाँ

दैनिक भास्कर पटना 04-02-2026

सरकारी स्कूलों में बच्चों की दक्षता रिपोर्ट बनाने की तैयारी शुरू

एजुकेशनरिपोर्टर | पटना

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षणिक दक्षता को जानने के लिए अब स्कूलस्तर पर रिपोर्ट तैयार की जाएगी। यह रिपोर्ट वार्षिक परीक्षा शुरू होने से पहले बनाई जानी है। इसकी जिम्मेदारी स्कूल के प्रधान शिक्षक और प्रधानाध्यापक को दी गई है, जिसमें अन्य शिक्षक भी सहयोग करेंगे। जिला शिक्षा कार्यालय के माध्यम से यह रिपोर्ट एससीईआरटी के निर्देश पर तैयार की जा रही है। रिपोर्ट कुल छह बिंदुओं पर आधारित होगी। इसमें यह देखा जाएगा कि एक साल में बच्चों ने क्या पढ़ा और क्या सीखा।

सभी सरकारी स्कूलों में उपलब्ध कराई गई एफएलएन (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरसी) किट से बच्चों ने क्या सीखा, इसका भी आकलन किया जाएगा। साथ ही शिक्षकों की नेतृत्व क्षमता की भी जांच होगी। एनसीएसएल (नेशनल सेंटर फॉर स्कूल लीडरशिप) और एनआईईपीए द्वारा बनाई गई स्कूल लीडरशिप एकेडमी इस प्रक्रिया पर काम कर रही है।

बीआईटीएम कोलकाता में शनिवार को आयोजित पूर्वी भारत विज्ञान एवं अभियांत्रिकी मेला में बिहार के विजेता छात्र-छात्राएं।

बिहार के बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

सफलता

- बांका की तुलसी को मॉलीनाथ मेमोरियल पुरस्कार मिला
- कोलकाता में पूर्वी भारत विज्ञान मेले का आयोजन हुआ

पटना, कार्यालय संवाददाता। बिरला औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय (बीआईटीएम) कोलकाता में आयोजित पूर्वी भारत विज्ञान एवं अभियांत्रिकी मेला में बिहार के युवा वैज्ञानिकों ने शानदार सफलता हासिल की है। यह चार दिवसीय प्रदर्शनी 13 से 16 जनवरी तक आयोजित हुई, जिसमें ओडिशा, बिहार और बंगाल से चयनित प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

बिहार से इस मेले के लिए कुल 39 मेधावी छात्र-छात्राओं का चयन किया गया था। इसमें डीएवी प्लस टू हाईस्कूल शंभुगंज, बांका की छात्रा तुलसी कुमारी को मॉलीनाथ मेमोरियल सर्वश्रेष्ठ बालिका प्रतिभागी का पुरस्कार मिला। उन्हें छह हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। उनकी मार्गदर्शिका शिक्षिका को भी दो हजार का पुरस्कार मिला। मुजफ्फरपुर के यूएमवी बरियारपुर के छात्र पीयूष कुमार को गणित में विशिष्ट पुरस्कार से नवाजा गया। खगड़िया के जीआरएचएस परवत्ता के छात्र राघव कुमार और प्लस टू एसआर हाईस्कूल परवत्ता के छात्र अभिजीत आदर्श, बेगूसराय के आरएमजी प्लस टू बरौनी की प्रीति कुमारी, बेगूसराय के डीएवी इटवा नगर के ओंकार, बक्सर के एमपी हाईस्कूल की छात्रा लवली कुमारी व बांका के प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल की अंशिका वर्णवाल को उत्कृष्ट पुरस्कार मिला।

राज्य को बेस्ट टीम प्रोजेक्ट का भी पुरस्कार मिला

तुलसी कुमारी और पीयूष कुमार के प्रदर्श को बेस्ट टीम प्रोजेक्ट का भी पुरस्कार मिला। अंतरराज्यीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बिहार की टीम ने द्वितीय स्थान हासिल किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में खगड़िया के जीआरएचएस सतासपुर परवत्ता के राघव कुमार और प्लस टू हाईस्कूल कन्हैयाचक की कुमकुम कुमारी और बेगूसराय बीपी इंटर स्कूल (काली स्थान चौक) के आशीष रंजन ने जीत दिलाई।

सैद्धांतिक दृष्टिकोण की बजाए व्यावहारिक शिक्षा पर जोर देना चाहिए : शिक्षा मंत्री

कार्यक्रम

पीएम श्री स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों के लिए नवाचार पर तीन दिवसीय क्षेत्रीय मार्गदर्शन सत्र का सीआइएमपी में हुआ समापन

जागरण संवाददाता, पटना: दुनिया नवोन्मेषी हो रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हर जगह उपलब्ध है। इसके साथ तालमेल बनाए रखने के लिए हमें नवीनतम तकनीक से अवगत रहना होगा। हमें सैद्धांतिक दृष्टिकोण की बजाए व्यावहारिक शिक्षा पर जोर देना चाहिए। शिक्षा प्रौद्योगिकी आधारित होनी चाहिए। हम द्विभाषी शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, क्योंकि अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है और इसमें धाराप्रवाह होना आवश्यक है। ये बातें शुक्रवार को शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने कहीं।

वे सीआइएमपी में पीएम श्री स्कूलों के शिक्षकों और छात्रों के लिए नवाचार पर तीन दिवसीय क्षेत्रीय मार्गदर्शन सत्र के समापन पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। सीआइएमपी के निदेशक प्रो. राणा सिंह ने कहा कि नवाचार केवल नए विचारों के बारे में नहीं है। यह हमारे शिक्षकों और छात्रों में रचनात्मकता, समस्या-समाधान और लचीलेपन को पोषित करने के बारे में है।

सीआइएमपी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते शिक्षा मंत्री सुनील कुमार साथ में अन्य • सौजन्य : संस्थान

युवाओं को सशक्त बनाना लक्ष्य

हमारा लक्ष्य युवा प्रतिभाओं को भविष्य के नेताओं और परिवर्तनकर्ताओं के रूप में सशक्त बनाना है। एआइसीटीई के नवाचार प्रकोष्ठ के नोडल प्रमुख अभिषेक रंजन, सीआइएमपी के संकाय सदस्य प्रो. अंकित शर्मा और गौरी गोपीनाथ द्वारा संचालित कई गतिशील सत्रों के माध्यम से कार्यशाला का संचालन किया गया, जिसमें छात्रों और शिक्षकों को अपने नवोन्मेषी विचारों को प्रस्तुत करने के लिए कहा गया, जिनका मूल्यांकन विशेषज्ञों द्वारा किया गया।

बिहार में बेटियां पढ़ाई की भर रहीं उड़ान

● सरकारी स्कूलों में शिक्षण कार्य में बढ़ा दबदबा ● अब अपने प्रखंड में ही करेंगी स्नातक की पढ़ाई

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। बिहार में बेटियां पढ़ाई की उड़ान भर रहीं हैं। मैट्रिक एवं इंटरमीडिएट की पढ़ाई में बेटों को पीछे छोड़ राज्य के सरकारी स्कूलों में शिक्षण कार्य में भी बेटियों का दबदबा बढ़ गया है। प्रारंभिक विद्यालयों में पचास फीसदी से अधिक शिक्षक आधी आबादी हैं। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण कार्य में भी बेटियों की हिस्सेदारी बढ़ गयी है।

राज्य में बेटों की तुलना में संख्या घटने के बावजूद स्कूली शिक्षा प्राप्त करने में बेटियां आगे निकल चुकी हैं। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति के आंकड़े बताते हैं कि मैट्रिक एवं इंटरमीडिएट की पढ़ाई में संख्या के लिहाज से बेटियों ने बेटों को पीछे छोड़ दिया है। नतीजतन, इस बार मैट्रिक की परीक्षा में बेटों की तुलना में 58,761 ज्यादा बेटियां बैठने वाली हैं। परीक्षा में 15,12,687 परीक्षार्थी बैठेंगे। इनमें 7,85,726 बेटियां होंगी। बाकी 7,26,961 बेटे होंगे। बेटों की तुलना में पहली पाली की परीक्षा में 29,147 एवं दूसरी पाली की परीक्षा में 29,618 ज्यादा बेटियां बैठेंगी। पहली पाली की परीक्षा में 7,58,633 परीक्षार्थी बैठेंगे। इनमें 3,93,890 बेटियां होंगी। बाकी 3,64,743 बेटे होंगे। दूसरी पाली की परीक्षा में 7,54,054 परीक्षार्थी बैठेंगे। उनमें 3,91,836 बेटियां होंगी। बाकी 3,62,218 बेटे होंगे। मैट्रिक की पढ़ाई में बेटों की तुलना में बेटियों की संख्या में सर्वाधिक इजाफा पटना जिले में हुआ है। पटना जिले में बेटों की तुलना में 5,052 ज्यादा बेटियां परीक्षा में बैठेंगी। पटना जिले में 71,022 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। इनमें 38,037 बेटियां होंगी। बाकी 32,985 बेटे होंगे। पहली पाली में 35,897

(शेष पृष्ठ ९ पर)

स्कूल-कॉलेजों में कंटेंट क्रिएटर लैब बनेंगी

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। केंद्रीय बजट 2026-27 में शिक्षा क्षेत्र को लेकर अहम घोषणाएं की गई हैं। स्कूल-कॉलेजों में कंटेंट क्रिएटर लैब बनेंगी। वहीं, देश के अलग-अलग हिस्सों में पांच यूनिवर्सिटी टाउनशिप बनाई जाएंगी।

खास बात यह है कि ये सभी यूनिवर्सिटी टाउनशिप प्रमुख औद्योगिक और लॉजिस्टिक कॉरिडोर के आसपास विकसित की जाएंगी। ऐसे में इसका सीधा लाभ यहां पढ़ने वाले छात्रों को मिलेगा। यह पहल इसलिए की जा रही है ताकि इंडस्ट्री और रोजगार सीधे उच्च शिक्षा के साथ जुड़ सकें।

इसके साथ ही सेवा क्षेत्र के विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाले उपायों की सिफारिश करने के लिए एक उच्च-स्तरीय 'शिक्षा से रोजगार और उद्यम' स्थायी समिति गठित करने की घोषणा से शिक्षा को कौशल से जोड़ने और उद्योगों की जरूरतों के मुताबिक शैक्षिक ढांचे पर फोकस बढ़ेगा। हर जिले में गर्ल्स हास्टल बनाने का ऐलान लड़कियों की इनरोलमेंट दर बढ़ाने के मकसद से किया गया है।

बजट में हुए ऐलान के मुताबिक, देशभर के 15,000 स्कूलों और 500 कॉलेजों में कंटेंट क्रिएटर लैब्स तैयार की जाएंगी। इसके साथ ही सरकार कंटेंट क्रिएटर्स के लिए नए सेटअप भी लगाएगी। सरकार मुंबई में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजीज की स्थापना भी करेगी।

03 नए नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल एजुकेशन एंड रिसर्च खुलेंगे

बजट में 'रचनात्मकता' को जगह मिलने से क्रिएटर्स में खुशी, कहा- खुलेंगे रोजगार के द्वार

पटना। केंद्रीय बजट में एनीमेशन, गेमिंग और कॉमिक्स (एवीजीसी) सेक्टर के लिए बड़ी घोषणा से बिहार के कंटेंट क्रिएटर्स में खुशी की लहर है। इस घोषणा के बाद पटना की कंटेंट क्रिएटर अलीशा सिंह ने कहा कि यह बजट हर उस युवा के लिए एक तोहफा है जिसके पास कहानी कहने का हुनर है, कंटेंट बनाने का जुनून है। अलीशा ने कहा कि बिहार के विद्यालयों में अगर कंटेंट क्रिएशन लैब की स्थापना हुई तो कई प्रतिभाएं निखरेंगी और खुद के साथ दूसरों के लिए भी रोजगार के द्वार खुलेंगे। क्रिएटर सिद्धार्थ आनंद ने कहा कि क्रिएटिविटी को सरकारी बजट में रोजगार की नजर से देखा गया है। स्कूल स्तर पर लैब लगने से बच्चे जल्दी सीखेंगे और भारत ग्लोबल कंटेंट हब बनेगा। पटना के ग्राफिक डिजाइनर ने अभिनव शर्मा ने इसे गेम चेंजर बताया।

नए सत्र से कक्षा नौवीं से 11वीं तक के पाठ्यक्रम में बदलाव

आयुर्वेद व प्राचीन गणितज्ञों के योगदान की गईं समाहित

रूपरेखा तैयार

- नई पुस्तकें मार्च के अंतिम सप्ताह तक बाजार में उपलब्ध करा दी जाएंगी
- नए पाठ्यक्रम में विषयवस्तु कम, गतिविधियों और चित्रों के माध्यम से शिक्षण पर अधिक जोर

जागरण संवाददाता, पटना : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) के कक्षा नौवीं से 11वीं तक के पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है। नए सत्र से बदली पुस्तकें मिलेंगी। नई पुस्तकें मार्च के अंतिम सप्ताह तक बाजार में उपलब्ध करा दी जाएंगी। एनसीईआरटी के अनुसार, नए पाठ्यक्रम में विषयवस्तु कम कर दी गई है। गतिविधियों और चित्रों के माध्यम से शिक्षण पर अधिक जोर दिया गया है।

एनसीईआरटी की विशेषज्ञों की टीम ने कक्षा नौवीं से 12वीं तक के पाठ्यक्रम में बदलाव किया है। सीबीएसई के सिटी कोआर्डिनेटर एसी झा ने बताया कि नए पाठ्यक्रम के लागू होने के बाद नए सत्र से विद्यार्थियों को ब्रिज कोर्स भी कराया जाएगा। इससे पहले एनसीईआरटी ने कक्षा एक से आठवीं तक के पाठ्यक्रम में बदलाव किया था। कक्षा नौवीं से 12वीं तक की पुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा के आधार तैयार कराई जा रही हैं।

नई शिक्षा नीति के तहत पाठ्यक्रम तैयार : नए पाठ्यक्रम को नई शिक्षा नीति अनुरूप कई महत्वपूर्ण बातों को शामिल किया गया है। इसमें पाठ्यचर्या के लक्ष्य, कौशल, सीखने की गतिविधियां, शिक्षण पद्धतियां, अध्याय पर समय आवंटन और मूल्यांकन का तरीका भी शामिल है। एनसीईआरटी के मुताबिक, नई पाठ्यपुस्तकों पर अनुभव आधारित शिक्षण, विषयों के बीच संबंध, भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्यों का समावेश और शैक्षिक तकनीक आदि पर नौवीं के सभी विषयों का ड्राफ्ट सिलेबस परिषद ने जारी किया है। एनसीईआरटी ने कहा कि कक्षा नौवीं की सभी नई पाठ्यपुस्तकें मार्च तक तैयार कर ली जाएंगी। 11 वीं की किताबों के लिए भी एनसीईआरटी मसौदा पाठ्यक्रम जारी किया जाएगा।

सिलेबस में कई बदलाव : पुराने सिलेबस की तुलना में नए में कई बदलाव किए गए हैं। पाठ्यक्रम को कौशल आधारित बनाया गया है। रटने के बजाय समझ, विश्लेषण और प्रयोग शामिल हैं। हर विषय में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया गया है। विज्ञान में आयुर्वेद और गणित में प्राचीन गणितज्ञों के योगदान की बातें समाहित हैं। विषयों को अब आपस में जोड़ा जाएगा। जैसे कला के साथ विज्ञान या खेल के साथ गणित। मूल्यांकन प्रणाली पूरी तरह बदलकर दो स्तरीय होगी। पहले विद्यार्थियों के ज्ञान का आकलन होगा और फिर उनकी दक्षता का। सीखने की प्रक्रिया व्यावहारिक और प्रयोग आधारित बनाई जा रही है, जिसमें प्रोजेक्ट, मॉडल और स्थानीय सर्वेक्षण शामिल किए जाएंगे।

11वीं में नामांकन लेने वाले विद्यार्थियों को करना होगा ब्रिज कोर्स

नए सत्र से कक्षा 11वीं में नामांकन लेने वाले विद्यार्थियों छह सप्ताह का ब्रिज कोर्स कराया जाएगा। इसी तरह कक्षा नौवीं व 10वीं के विद्यार्थियों को भी ब्रिज कोर्स करना होगा। ब्रिज कोर्स विद्यार्थियों को इसलिए कराया जाएगा ताकि उन्हें नए पाठ्यक्रम पर आधारित पुस्तक पढ़ने और समझने में परेशानी नहीं हो।

तकनीक युग में बच्चों को किताबों से जोड़ना जरूरी

- बिहार संग्रहालय में बाल साहित्य महोत्सव का आगाज हुआ

पटना, कार्यालय संवाददाता। प्रयोग संगठन द्वारा बिहार संग्रहालय में आयोजित दो दिवसीय 'उड़ान' बाल साहित्य महोत्सव का शनिवार को आगाज हुआ। टाटा ट्रस्ट्स के सहयोग और विप्रो फाउंडेशन के साझेदारी वाले इस आयोजन का उद्देश्य तकनीक के दौर में बच्चों को किताबों से जोड़ना है।

प्रमंडलीय आयुक्त अनिमेश पराशर बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि मूल्यहीन-दिशाहीन हो रहे वर्तमान युग के बच्चों के अंतर्मन में मूल्यों के बीज डालने होंगे। इसके लिए उन्हें पुस्तकों से जोड़ना आवश्यक है। विशिष्ट अतिथि व बिहार संग्रहालय के अपर निदेशक अशोक कुमार सिन्हा ने इसे बिहार का पहला ऐसा महोत्सव बताते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों को पुस्तकों की ओर आकर्षित करने व उनकी सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। निदेशक सूर्य प्रकाश राय ने बताया कि महोत्सव ने देशभर के बाल साहित्यकारों को एक मंच पर लाया है।

टीएलएम से बच्चों में बढ़ती है सीखने की क्षमता

कटरा. प्रखंड मुख्यालय स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में प्रखंड स्तरीय टीएलएम मेला का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाध्यापक रामनरेश पासवान ने की. शिक्षकों द्वारा शैक्षणिक कार्य को सुग्राह्य बनाने को लेकर टीएलएम का प्रदर्शन किया गया. प्रधानाध्यापक ने कहा कि टीएलएम के माध्यम से बच्चों में सीखने की क्षमता का विकास होता है.विद्यालय में इसे लागू कर बच्चों का समुचित समग्र विकास किया जा सकता है. कार्यक्रम का संचालन ललित कुमार चौधरी, यशबीर कुमार, गणेश कुमार, कृति सागर, शुभम कुमार, पंकज कुमार लाल सहित अन्य लोगों ने संबोधित किया.

सुर्खियाँ

मोबाइल का **अत्यधिक उपयोग** बच्चों के दिमाग को कर रहा नष्ट

बच्चों का मोबाइल स्क्रीन टाइम नियंत्रित करने को बनेगी नीति

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना: बच्चों का मोबाइल पर स्क्रीन टाइम कम हो, इस संबंध में सरकार पालिसी लाएगी। उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने सोमवार को विधानसभा में सिकटा के विधायक समृद्ध वर्मा द्वारा लाए गए प्रश्न के जवाब में यह बात कही। वहीं सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री श्रेयसी सिंह ने कहा कि नेशनल इंस्टीच्यूट आफ मेंटल साइंसेस की रिपोर्ट के आधार पर सरकार निर्णय लेगी।

समृद्ध वर्मा ने कहा कि बिहार में हालिया शोध और डब्ल्यूएचओ के आंकड़े के अनुसार बच्चों का स्क्रीन टाइम काफी बढ़ गया है। यह समस्या केवल आज ही नहीं, बल्कि हमारे आने वाली पीढ़ी के भविष्य के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। मोबाइल का अत्यधिक उपयोग और आनलाइन गेम्स बच्चों के विकसित होते दिमाग को नष्ट कर रहे हैं। इससे उनमें एकाग्रता की कमी और आक्रामकता बढ़ी है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने कहा कि यह एक गंभीर विषय है। भारत सरकार ने इसके लिए अनेकों नियम बनाए हैं। स्क्रीन टाइम रोकने को नियम बनाए जा रहे हैं। समाज और सरकार को मिलकर इस समस्या पर काम करना होगा।

विधानसभा में घोषणा

- एक शोध के अनुसार बिहार में बच्चों का स्क्रीन टाइम काफी बढ़ा
- मोबाइल के अधिक उपयोग से एकाग्रता में आ रही है कमी

मोबाइल से मानसिक प्रभाव

- छोटे बच्चों में मस्तिष्क विकास धीमा हो सकता है
- भाषा सीखने की क्षमता प्रभावित
- पढ़ाई में रुचि कम होना, याददाश्त कमजोर होना
- रचनात्मकता कम होती है, एकाग्रता कम होना
- परिवार से बातचीत कम
- दोस्तों के साथ खेलना कम हो जाता है

इन बातों का रखें ध्यान

- बच्चों को मोबाइल से दूर रखें। बहुत जरूरी होने पर यदि मोबाइल दें भी तो उनकी गतिविधियों पर नजर रखें।
- घर में मोबाइल प्रयोग की समयसीमा निर्धारित करें। बच्चों के सामने बहुत जरूरी होने पर ही प्रयोग करें।
- घर में बाल उपयोगी साहित्य रखें। साथ ही खुद भी कुछ समय पुस्तकें पढ़ने के लिए निर्धारित करें।

शारीरिक प्रभाव

- आंखों पर असर : आंखों में जलन, सूखापन, धुंधला दिखना
- नींद में कमी : मोबाइल की नीली रोशनी से नींद प्रभावित
- मोटापा बढ़ना : कम शारीरिक गतिविधि के कारण वजन बढ़ सकता है
- गर्दन और रीढ़ की समस्या : लंबे समय तक झुककर देखने से दर्द और बैठने की स्थिति खराब होती है

सभी अभ्यास विद्यालय बनेंगे 'निपुण मॉडल स्कूल'

(आज शिक्षा प्रतिनिधि)

पटना। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा बुधवार को जिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के तहत उपलब्धि प्रदर्शनी-सह-सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें शैक्षणिक सत्र 2025-26 के दौरान सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा विद्यालय विकास एवं संस्थागत सुधार के लिए अपनायी गयी उत्कृष्ट एवं नवीन कार्य पद्धतियों को साझा किया गया।

एससीईआरटी में लगी प्रदर्शनी

विभिन्न संस्थानों द्वारा एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने और आगामी सत्र 2026-27 के लिए प्रभावी कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता जतायी गयी।

इसका शुभारंभ उपनिदेशक सुभाष कुमार गुप्ता, संयुक्त निदेशक सुषमा कुमारी, अरूप, विभागाध्यक्ष विभा रानी, तेज नारायण प्रसाद, और व्याख्याता सपना द्वारा दीप प्रज्वलन और बिहार गीत के साथ किया गया। इस अवसर पर जिला सशक्तिकरण कार्यक्रम की अब तक की यात्रा पर आधारित एक विशेष वीडियो का प्रदर्शन भी किया गया। राज्य स्तरीय उपलब्धि प्रदर्शनी में सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए स्टॉल की व्यवस्था की गयी थी, जहां शैक्षणिक सत्र 2025-26 की प्रमुख उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। प्रदर्शनी के दौरान अतिथियों द्वारा गैलरी वॉक कर प्रत्येक जिले के नवाचारों का अवलोकन किया गया।

शिक्षा विभाग के सचिव दिनेश कुमार, जो राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद के निदेशक भी हैं, ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि हमारे अध्यापक शिक्षा संस्थान अब डेटा और अनुसंधान आधारित सुधारात्मक कार्यों पर बल दे रहे हैं। आगामी सत्र 2026-27 में हमें इन अनुभवों को आधार बनाकर प्रत्येक जिले की आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी कार्ययोजना को लागू करनी होगी। अध्यापक शिक्षा संस्थान को राज्य एवं विद्यालय के बीच मेंटरिंग तंत्र को विकसित करने में महत्वपूर्ण कड़ी के रूप काम करेंगे। विद्यालायो में की जाने वाली

उत्कृष्ट कार्य करने वालों का सम्मान

गतिविधियां बच्चों को शिक्षा से और अधिक जोड़ सकेंगी। गतिविधि आधारित शिक्षण ही निपुण विद्यालय बनाने में सहायक होगा।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद की विभागाध्यक्ष विभा रानी ने कहा कि संस्थानों द्वारा विकसित भाषा और गणित के पूरक गतिविधि पैकेज तथा स्कूलों में किये जा रहे स्कूल एक्सपीरियंस प्रोग्राम से प्रशिक्षु शिक्षकों की समझ में व्यापक सुधार आया है। लक्ष्य है कि अभ्यास विद्यालयों को वास्तविक निपुण मॉडल स्कूल के रूप में विकसित किया जाय, जहां पुस्तकालय, क्विज और सुरक्षित वातावरण सीखने का आधार बनें।

पैनल चर्चा में विशेषज्ञों ने एफएलएन पहल और डिजिटल नवाचारों पर विस्तार से संवाद किया। इसके उपरांत, चयनित अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा अपनी सर्वश्रेष्ठ कार्य प्रणालियों का प्रस्तुतीकरण दिया गया। समारोह के अंतिम चरण में, उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

परीक्षा में आये कठिन सवाल प्राइवेट स्कूल वाले हुए नाराज

पटना (आशिप्र)। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की 12वीं की भौतिकी एवं गणित की परीक्षा में पूछे गये कथित कठिन सवाल ने प्राइवेट स्कूलों के संचालकों को नाराज कर दिया है। प्राइवेट स्कूलों का संगठन बिहार पब्लिक स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन ने कहा है कि भौतिकी एवं गणित की परीक्षा के प्रश्नपत्र का स्तर आईआईटी जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षा के अनुरूप प्रतीत हुआ, जो सामान्य परीक्षार्थियों के लिए उचित नहीं है। प्रश्नों का स्तर एनसीईआरटी के मानकों के अनुरूप होना चाहिये, ताकि सभी परीक्षार्थियों को समान एवं न्यायसंगत अवसर मिल सके। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. डी. के. सिंह, उपाध्यक्ष डॉ. एस. एम. सोहैल, राष्ट्रीय सचिव प्रेम रंजन एवं कोषाध्यक्ष विजय कुमार सिंह ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से कहा है कि प्रश्नपत्रों का स्तर निर्धारित पाठ्यक्रम और ब्लूप्रिंट के अनुसार ही रखा जाय अत्यधिक कठिन और सिलेबस से बाहर के प्रश्नों की समीक्षा की जाय। मूल्यांकन प्रक्रिया उदारता बरती जाय।

दैनिक भास्कर पटना 25-02-2026

बिहार की विरासत से जुड़ेंगे बच्चे, अभी 9 जिलों से शुरुआत

स्कूलों में बच्चों को रोजाना सुनाई जाएगी 'एक कहानी'

एजुकेशन रिपोर्टर | पटना

अब सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे रोज बिहार की संस्कृति और इतिहास से जुड़ी एक नई कहानी सुनेंगे। शिक्षा विभाग ने बच्चों में भाषा कौशल, रचनात्मकता और सोचने की क्षमता बढ़ाने के लिए 'एक कहानी' कार्यक्रम शुरू किया है। यह पहल किलकारी बिहार बाल भवन और प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के सहयोग से की जा रही है। शिक्षा विभाग का मानना है कि 'एक कहानी' कार्यक्रम से बच्चों को अपनी जड़ों और विरासत से जुड़ने का मौका मिलेगा और सीखने की प्रक्रिया भी रोचक बनेगी। फिलहाल यह कार्यक्रम 23 से 27 फरवरी तक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 9 जिलों के 75 स्कूलों में चलाया जा रहा है। पायलट चरण में पटना जिले के आठ समेत गया, मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, पश्चिमी चंपारण, जमुई, किशनगंज, जहानाबाद और शिवहर के स्कूल शामिल हैं। अप्रैल से इसे राज्य के सभी प्राथमिक विद्यालयों में लागू करने की योजना है।

20 मिनट का खास सत्र

इस कार्यक्रम के तहत कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों के लिए मध्याह्न भोजन के बाद रोज 20 मिनट का सत्र कराया जाएगा। इसमें पहले ऑडियो कहानी सुनाई जाएगी, फिर 10-15 मिनट तक चर्चा, प्रश्नोत्तरी, चित्रांकन और लघु लेखन गतिविधियां कराई जाएंगी। शिक्षक हर दिन गूगल फॉर्म के जरिए इसकी रिपोर्ट भी देंगे।

पूर्वोत्तर रेलवे
खुली निविदा नोटिस का प्रथम संशोधन

टीचर्स ऑफ बिहार : बिहार के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए सशक्त शैक्षणिक मंच

पटना। टीचर्स ऑफ बिहार आज बिहार के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए एक उपयोगी, प्रभावी और सशक्त शैक्षणिक मंच के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुका है। यह मंच विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से शिक्षकों द्वारा विद्यालय स्तर पर किए जा रहे नवाचारों, शैक्षणिक गतिविधियों और रचनात्मक प्रयासों को न केवल आगे बढ़ा रहा है, बल्कि उनकी पहचान को राज्य से निकालकर राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने का कार्य भी कर रहा है।

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा शिक्षकों एवं छात्रों के शैक्षणिक विकास को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की ई-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जा रहा है। इन ई-पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा रहा है। मंच की प्रमुख ई-पत्रिकाओं में बालमन, दैनिक ज्ञानकोश, बालमंच, पद्यपंकज, गद्यगुंजन एवं प्रज्ञानिका शामिल हैं, जो शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही हैं। एक प्रोफेशनल लर्निंग [illegible]

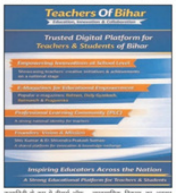

कम्युनिटी के रूप में टीचर्स ऑफ बिहार ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सशक्त पहचान स्थापित की है। यह मंच शिक्षकों को आपसी संवाद, अनुभवों के आदान-प्रदान एवं सतत व्यावसायिक विकास का अवसर प्रदान कर रहा है।

टीचर्स ऑफ बिहार के संस्थापक शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने बताया कि इस मंच का उद्देश्य शिक्षकों और छात्रों को एक साझा डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराना है, जहां नवाचार, ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान हो सके।

वहीं प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार निरंतर शिक्षकों की सकारात्मक पहलों को प्रोत्साहित कर रहा है और शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार की दिशा में सार्थक प्रयास कर रहा है।

[illegible] ने बताया कि मंच के माध्यम से आयोजित विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम, वेबिनार एवं ऑनलाइन गतिविधियां शिक्षकों और छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रही हैं।

कुल मिलाकर यह टीचर्स ऑफ बिहार बिहार ही नहीं, बल्कि देशभर में शिक्षकों एवं छात्रों के लिए एक प्रेरणादायी और मार्गदर्शक शैक्षणिक मंच के रूप में उभर रहा है।

बेसिक से लेकर उच्च शिक्षा तक की बेहतरी के लिए तैयार होगा माडर्न एजुकेशन इकोसिस्टम

व्यवस्था में बदलाव के लिए हो रही पहल, **70 हजार करोड़** से ज्यादा राशि होगी खर्च

रोडमैप तैयार

दीनानाथ साहनी • जागरण

पटना : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा संपूर्ण शिक्षा की बेहतरी को लेकर की गई घोषणाओं को अमलीजामा पहनाने और उसे जमीन पर उतारने हेतु वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए शिक्षा विभाग के बजट में तकरीबन 70 हजार करोड़ रुपये का इंतजाम किया गया है। इसमें शिक्षा विभाग का 60204.60 करोड़, उच्च शिक्षा विभाग का 8003.57 करोड़ तथा विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग का 1003.57 करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि शामिल है। बजट में बिहार की शिक्षा व्यवस्था में भविष्य का पूरा खाका खींचा गया है। अब सरकार बेसिक शिक्षा से उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा तक में माडर्न एजुकेशन इकोसिस्टम तैयार करने जा रही है जो अगले पांच वर्षों में शिक्षा में बड़े बदलाव का वाहक होगा। वैश्विक चुनौतियों को देखते हुए सरकार ने राज्य की शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे नीतिगत बदलाव, तय की जा रही जवाबदेही, संरचनात्मक सुधार और अवसर विस्तार पर खासा फोकस किया है। बजट पारित होने से पहले सरकार में शिक्षा मंत्री सुनील कुमार स्वीकार किया कि चुनौतियां बड़ी के उत्तर हैं, किंतु उससे बड़ा शिक्षा में सुधार करने का हौसला है, संकल्प भी। बजट में स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच संगीत व कला शिक्षा के लिए 44.83 करोड़ का प्रावधान किया गया। इस राशि से राज्य के सभी 40270 प्राथमिक, 28293 मध्य और 9360 माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बैंड तैयार करने को वाद्य यंत्र मुहैया कराया जाएगा।

एजुकेशन सिटी बनेगा अनुसंधान और नवाचार केंद्र : शिक्षा मंत्री ने बजट में नए एजुकेशन सिटी की स्थापना की घोषणा की है। इसकी परिकल्पना वैश्विक स्तर की गई है, जिसका उद्देश्य राज्य में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना होगा। यह संस्थान अंतरराष्ट्रीय स्तर का होगा, जो शिक्षा के क्षेत्र में बिहार की नवीन परिदृश्य पेश करेगा। इसमें उपग्रह परिसरों सहित विभिन्न शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। नये वित्तीय वर्ष में सभी 534 प्रखंड में माडल विद्यालयों की स्थापना पर 800 करोड़ रुपये और चुनिंदा 55 प्रतिष्ठित कालेजों को सेंटर आफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित करने पर 200 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे।

नए वित्तीय वर्ष की योजनाएं

- 55 कालेज को सेंटर आफ एक्सीलेंस बनाने का कार्य, बजट 50 करोड़
- 211 नये डिग्री महाविद्यालयों की स्थापना पर व्यय होंगे 320 करोड़
- उच्च शिक्षण संस्थानों के विकास पर 275 करोड़ होंगे खर्च
- मुंगेर विवि, पूर्णिया विवि एवं पाटलिपुत्र विवि को मिलेगा नया भवन

स्नातक पास 1.55 लाख छात्राओं को मिलेंगे 50-50 हजार

सरकार द्वारा पहली बार पेश किए गए उच्च शिक्षा विभाग के बजट में सबसे पहले मुख्यमंत्री बालिका प्रोत्साहन योजना की चर्चा है। इस वर्ष 1.55 लाख स्नातक उत्तीर्ण छात्राओं को 50-50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि देने का प्रावधान है। बजट में दूसरे स्थान पर बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना की चर्चा है। इस योजना में अब तक चार लाख 50 हजार 945 छात्र-छात्राओं के लिए 13765.96 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की जा चुकी है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि किसी कारणवश जिन लाभुकों की मृत्यु हो गई है, उनके ऋण को ब्याज समेत माफ कर दिया गया है। इस निर्णय से राहत मिलेगी।

शैक्षणिक भ्रमण में किलकारी बाल भवन को शामिल किया

निर्णय

- शिक्षा विभाग ने सभी नौ प्रमंडलों के किलकारी बाल भवन को लिखा पत्र
- अब तक पटना किलकारी बाल भवन में पांच से छह स्कूल के बच्चे आए

पटना, मुख्य संवाददाता। राज्य के सभी नौ प्रमंडलों के किलकारी बाल भवन में सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण करवाया जाएगा। इसमें प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक तक के विद्यार्थी शामिल होंगे। शिक्षा विभाग ने सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों को पत्र लिखा है। इसमें कहा गया है कि नौ प्रमंडलों के किलकारी बाल भवन को शैक्षणिक भ्रमण में शामिल किया गया है।

शिक्षा विभाग के पत्र लिखने के साथ ही विभिन्न स्कूलों से बच्चों की टीम किलकारी बाल भवन पहुंचने भी लगी है। शनिवार को दानियावां के नौवीं कक्षा के विद्यार्थियों की टीम ने किलकारी बाल भवन पटना का शैक्षणिक भ्रमण किया। इस दौरान सभी को किलकारी में हो रही तमाम गतिविधियों की जानकारी दी गई। किलकारी में पुस्तकालय के साथ संगीत, नृत्य, कंप्यूटर, खेल गतिविधि आदि के बारे में बताया गया।

किलकारी बाल भवन को जान सकेंगे बच्चे

सरकारी स्कूल के बच्चों को हर साल शैक्षणिक भ्रमण करवाया जाता है। इसके तहत अब तक बिहार म्यूजियम, पटना म्यूजियम, गोलघर, चिड़ियाघर आदि का भ्रमण करवाया जाता था। लेकिन अब ये बच्चे किलकारी बाल भवन को भी जाने, इसके लिए किलकारी बाल भवन को शामिल किया गया है। किलकारी बाल भवन की निदेशिका ज्योति परिहार ने बताया कि अब तक पटना किलकारी बाल भवन में पांच से छह स्कूल के बच्चे आ चुके हैं। हर प्रमंडल में स्थानीय सरकारी स्कूल के विद्यार्थी किलकारी का भ्रमण करेंगे।

शिक्षा से सुरक्षा

आपदा सजगता में उत्कृष्ट प्रदर्शन

बिहार शिक्षा परियोजना को मिला राज्य स्तरीय सम्मान

सरदार पटेल भवन में बुधवार को 'सुरक्षित शनिवार' के बेहतर कार्यान्वयन को प्रतिनिधि के रूप में सम्मान ग्रहण करते राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. उदय कुमार उज्ज्वल।

'सुरक्षित शनिवार' में बेहतर कार्य पर बीईपीसी को सम्मान

- सरदार पटेल भवन स्थित आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सभागार में समारोह हुआ

पटना, कार्या.। मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के तहत 'सुरक्षित शनिवार' के बेहतर कार्यान्वयन और इस दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (बीईपीसी) के राज्य परियोजना निदेशक नवीन कुमार और उनकी पूरी टीम को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने सम्मानित किया है।

यह सम्मान सरदार पटेल भवन स्थित आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सभागार में दिया गया। परिषद की ओर से यह सम्मान राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. उदय कुमार उज्ज्वल ने ग्रहण किया। मालूम हो कि बीईपीसी और बीएसडीएमए की ओर से राज्य के 77,926 विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को 'सुरक्षित शनिवार' कार्यक्रम होता है। इसके तहत स्कूली छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार की आपदाओं से बचाव एवं आपातकालीन स्थितियों से निपटने की जानकारी दी जाती है। इस अवधारणा को और मजबूती देने के लिए व्यापक कदम उठाए गए हैं। इस बाबत सभी डीईओ को पत्र जारी कर "विद्यालय आपदा प्रबंधन समिति" के गठन का निर्देश दिया गया है।

साथ ही बच्चों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए बाल प्रेरकों और आपदा प्रबंधन के लिए नोडल शिक्षक के रूप में फोकल शिक्षकों के चयन को सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है।

मौके पर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण से पीएन राय, नरेंद्र कुमार सिंह, प्रकाश कुमार के साथ सचिव मो. वारिस खान (भा.प्र.से.) और ओएसडी मो. मोइज उद्दीन आदि थे।

www.teachersofbihar.org

सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों के लिए पाठ-टीका अनिवार्य

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : राज्य के तमाम सरकारी विद्यालयों में पाठ-टीका के आधार पर शिक्षक पढ़ाएंगे। जींस और टीशर्ट में शिक्षक विद्यालय नहीं जाएंगे। प्रधानाध्यापक व शिक्षक द्वारा चखने के बाद ही बच्चों को मध्याह्न भोजन परोसे जाएंगे। शिक्षकों की फर्जी उपस्थितिदर्ज होने पर प्रधानाध्यापक भी दोषी होंगे। शिक्षा विभाग की ओर से सरकारी विद्यालयों के संचालन से संबंधित प्रविधान को सख्ती से लागू करने का निर्देश सभी जिला शिक्षा पदाधिकारियों (डीईओ) को दिया गया है। प्रविधान के मुताबिक सभी शिक्षक-शिक्षिका समय पर विद्यालय पहुंचेंगे। ई-शिक्षाकोष पोर्टल पर उपस्थिति दर्ज करेंगे। छद्म उपस्थिति या फोटो से उपस्थिति दर्ज करने पर शिक्षक-शिक्षिका के साथ प्रधानाध्यापक भी दोषी माने जाएंगे। बिना अवकाश स्वीकृत कराए विद्यालय से अनुपस्थित नहीं होंगे। प्रधानाध्यापक द्वारा अवकाश स्वीकृत करने में परहेज नहीं किया जाएगा, लेकिन एक समय में अधिकतम दस प्रतिशत से ज्यादा शिक्षकों को अवकाश नहीं दिया जाएगा। अवकाश स्वीकृति में ध्यान रखा जाएगा कि शिक्षक के अवकाश में जाने से पठन-पाठन बाधित नहीं होना चाहिए। विद्यालयों में पदस्थापित शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मी विद्यालय-कार्यालय अवधि में गरिमायुक्त औपचारिक परिधान पहनकर आएंगे। जींस-टीशर्ट में नहीं आएंगे। बैंक से वेतन निकालने के लिए एक भी शिक्षक-शिक्षिका विद्यालय अवधि में बाहर नहीं जाएंगे। शिक्षक-शिक्षिका अपनी समस्याओं के लिए जिला कार्यालय नहीं आएंगे। वे अपनी समस्याओं से संबंधित आवेदन अपने प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय में देंगे, जिसपर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी समस्या का समाधान करेंगे।

जींस और टीशर्ट में विद्यालय नहीं आएंगे शिक्षक, राज्य के सभी डीईओ को अनुपालन कराने का दिया गया निर्देश

साप्ताहिक और मासिक जांच परीक्षा अनिवार्य

सभी शिक्षक-शिक्षिका द्वारा पाठ-टीका लिखी जाएगी और उसके अनुसार वर्ग संचालन होगा। प्रत्येक शनिवार को प्रत्येक शिक्षक-शिक्षिका की पाठ-टीका का प्रधानाध्यापक द्वारा प्रतिहस्ताक्षरित किया जाएगा। प्रधानाध्यापक स्वयं भी पाठ-टीका का संधारण करेंगे। निरीक्षी पदाधिकारी द्वारा मांगे जाने पर पाठ-टीका दिखानी होगी। पहली घंटी में वर्ग शिक्षक-शिक्षिका द्वारा बच्चों की उपस्थिति अचूक रूप से बनाई जाएगी। प्रधानाध्यापक द्वारा उसी वर्ग की उपस्थिति दर्ज की जाएगी, जिस वर्ग के वे वर्ग शिक्षक होंगे। साप्ताहिक एवं मासिक परीक्षा होगी।

ऑनेस्टी स्टोर | प. बंगाल के उत्तर 24 परगना में है स्कूल

स्कूल चला रहा है बिना दुकानदार के दुकान ताकि बच्चे ईमानदार बनें

अब तक कभी कोई बेईमानी नहीं हुई

सीख... कम पैसे देकर ज्यादा सामान नहीं लिया

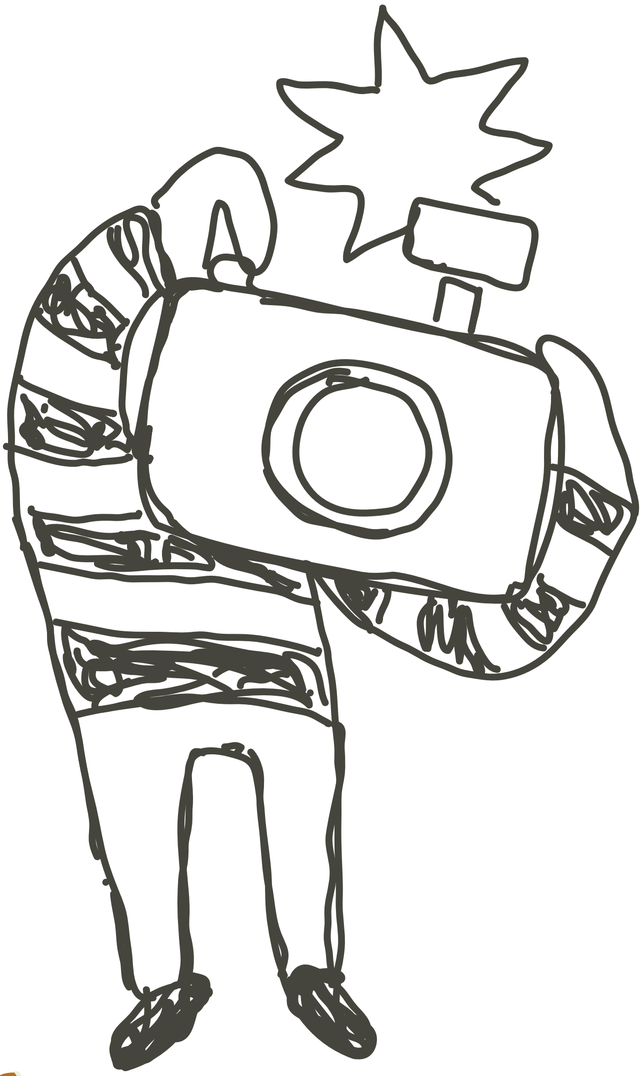

फोटोज़ ऑफ द डे

फ़ोटोज़ ऑफ़ द डे

प्रोजेक्ट बालिका इंटर विद्यालय शाहकुंड, भागलपुर

प्राथमिक विद्यालय सरस्वतीपुर, छातापुर, सुपौल

प्राथमिक विद्यालय आदिवासी टोला, मधुरा, फारबिसगंज, अररिया

प्राथमिक विद्यालय नारायणपुर, महाराजगंज, राजनगर, मधुबनी

प्राथमिक विद्यालय नौला, मुसहरी, वीरपुर, बेगूसराय

राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट, गोपालगंज

फ़ोटोज़ ऑफ़ द डे

प्राथमिक विद्यालय गंगेली, के नगर, पूर्णिया

प्राथमिक विद्यालय अमौना, दाउदनगर, औरंगाबाद

प्राथमिक विद्यालय जगरिया, चैनपुर, कैमूर

मध्य विद्यालय बक्संडा कुआरी,परसा,सारण

उत्क्रमित मध्य विद्यालय विश्वम्भरपट्टी पश्चिम, कटरा, मुजफ्फरपुर

राजकीय प्राथमिक विद्यालय दिवानटोक राघोपुर, वैशाली

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।
इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुँचा सकते हैं।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें - https://forms.gle/pjfCeHDvaVdvajvh6

हमसे जुड़ने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें।

व्हाट्सएप से जुड़ने के लिए क्लिक करें

PRAGYANIKA
WhatsApp group

ईमेल: writers.teachersofbihar@gmail.com

वेबसाइट : www.teachersofbihar.org/pragyanika

PRAGYANIKA
WhatsApp group

Facebook Group
@teachersofbihar

X
@teachersofbihar

Instagram
@teachersofbihar

YouTube
@teachersofbihar

@group/teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar